भगवान कौन हैं।

तटवर्ती वीर राघव राव

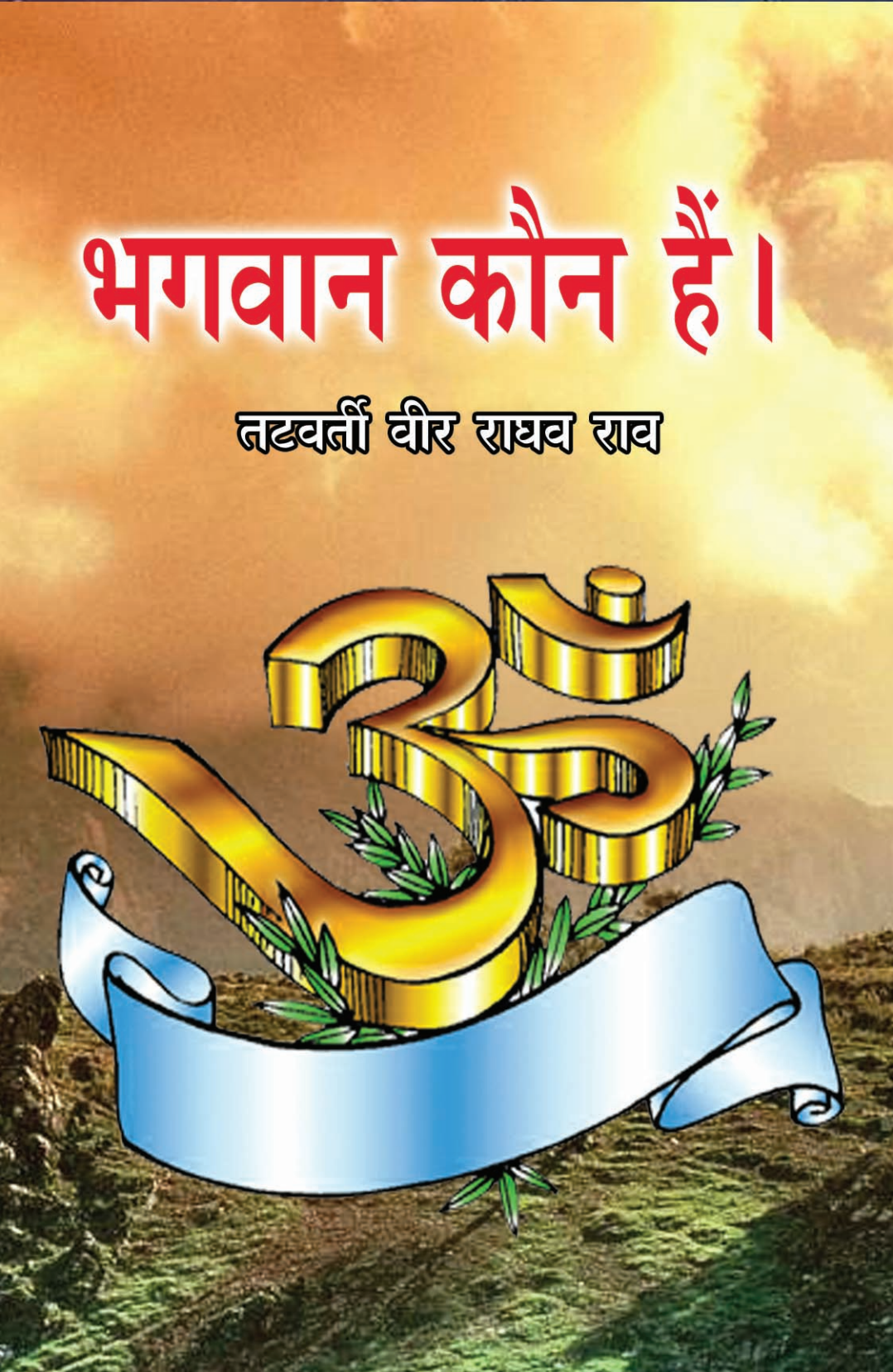

भगवान कौन हैं।

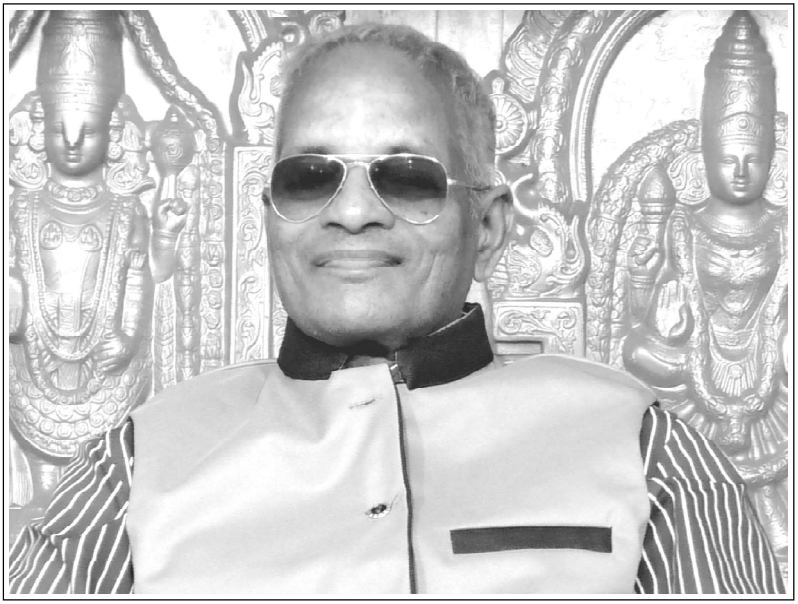

तटवर्ती वीर राघव राव

भीमावरम - 534201.

Ph: 9440309812

email : balajipyramid.bvrm@gmail.com

Rs.120/-

सूची

1. भगवान के बारें में जानिए 3
2. विग्रह भगवान है क्या? 5
3. सच्ची आराधना 8
4. विग्रहराधना नहीं निग्रहराधना करनी है 9
5. श्रीमद भगवद्गीता में भगवान द्वारा अपने बारे में दिया हुआ संदेश ... 11
6.मनुष्य जो करता है। - भगवान जो देखता है । 15
7.भगवान का अवगाहन करना है 17
8.सच्चा देवालय 21
9.भगवान को पहचानने का एकमात्र मार्ग 23
10.आत्मा की दृष्टि ही भगवान की दृष्टि है। 25
11.विश्वास करना है कि आत्मा ही भगवान है 27
12.किस पर कृतज्ञता दिखानी चाहिए? 29
13.भगवान निराकार हैं 33
14.भगवान चेतना के अवतार हैं 35
15.भगवान की शक्ति अपार है 37
16.भक्ति क्या है? 40
17.भक्ति के विविध प्रकार 42
18.सच्चे भक्त 45
19.सच्चा भक्त कौन है? 48
20.सभी देवता हमारा मार्गदर्शन करने आते हैं 51
21.आपको बढ़ने के लिए नीचे की रेखा को छोड़ना होगा 53
22.जो लोग प्रशंसा सोचते है वह भगवान नहीं करते है 55
23.पूजा से गुण प्रधान हैं 57
24.रूप नहीं, गुण को ठीक करना है 59
25.अंतर्ज्ञान महत्वपूर्ण है 61
26.भगवान भावना को ही देखते हैं 62
27.प्रार्थना अर्थात भगवान को नहीं,खुद को बदलना है 64
28.भगवान बीज देते हैं, फल नहीं 65
29. क्या एक प्राकृतिक विशेषता होनी चाहिए? 67
30.हम जो पुण्य करते हैं वह एक ही परिणाम नहीं देते 69
31.भगवान की प्रशंसा पानी है 71
32. भक्ति और मुक्ति पानेवालों की तुलना नहीं करनी है 74
33. भगवान से इष्टता बढ़ाने से पूर्व 76
34.भगवान की शक्ति को कम नहीं करना है 78

भगवान के बारें में जानिए

1. सर्वव्यापी : सकल चराचर में व्याप्त, जो केवल एक जगह नहीं है।

2. अंतर्यामी : सर्व जीवों के अंतर्मन की बात जानने वाला।

3. निराकार : जिसका आकार नहीं है।

4. नामरहित : जिसका कोई नाम नहीं है।

5. रूपरहित : जिसका कोई रूप नहीं है।

6.जिसका दर्शन करना संभव नहीं है :जिसको भौतिक दृष्टि से देख नहीं सकते।

7.निर्गुण : जिसके गुण नहीं है।

8.अविनाशी : जिसका कोई विनाश नहीं है।

9.अनंत : जिसका आरंभ और अंत नहीं है।

10.सच्चिदानंदस्वरूप : जो हमेशा आनंद में रहता है।

11.अनुराग : जिसको राग-द्वेष नहीं है।

12.सृष्टिकर्ता : जिसने सकल चराचर का निर्माण कर उसे प्रकट किया है।

13.जगन्नाटक सूत्रधारी : इस जगत के नाटक का सूत्रधार।

14.निश्चल : जो स्थिर होकर प्रकाश दे रहा है।

15.साक्षीभूत : जो सबके लिए साक्षी है।

16.परिपूर्ण : जो पूर्ण रूप से भरा हुआ है।

17.निर्मल : जो मलिन नहीं है।

18.कालातीत : जो समय से अतीत है।

19.अखंड : जिसे खंडित नहीं कर सकते।

20.शाश्वत : जिसे जनम मरण नहीं है।

21.नित्य : जिसका अंत नहीं है।

22.सत्य : जो सत्य है।

23.अक्षरस्वरूप : जिसका नाश नहीं है।

24.स्वयंप्रकाशमान : स्वयं प्रकाश करनेवाला।

25.परब्रह्म : जो सबका पिता है।

26.अप्रमेय : जिसकी कोई उपमा नहीं है।

27.परस्पर : जो सबसे परे है।

28.इन्द्रयानित : जिसे मानव केवल अपनी इन्द्रियों से जान नहीं सकता।

29.तुरीयातीत : जो तुरीया से भी अतीत है।

30.अव्येय : जिसका मूल और वचन बिखरता नहीं है।

31.विदेह : जिसका देह नहीं है। वस्त्र और आभूषण भी नहीं हैं।

32.इच्छाहीन : जिसकी इच्छा नहीं है।

33.कर्महीन : जिसके कर्म नहीं है।

34.उपाधीन : जिसको उपाधी नहीं है।

35.कर्महीन : जो कर्म नहीं करता है।

36.वर्णहीन : जिसका कुल और गोत्र नहीं है।

37.अपरिमित : जिसका परिमाण नहीं है।

38.श्रवनहीन : जिसकी आँख और कान नहीं है।

39.अकल्पित : जिसको कल्पना में आकर नहीं दे सकते।

40.स्वयंभू : जिसका निर्माण हम नहीं कर सकते।

41.अपने आप में रहनेवाला।

42.जो हर अणु में व्यापक है।

43.जिसका आवाहन और विसर्जन नहीं कर सकते।

44.स्वयंसिद्ध : जिसका यौवन और वृद्धावस्था से संबंध नहीं है ।

45.अद्वैत : जो दो नहीं है। एक ही है।

46.अभोक्ता : जो भोगकर भी नहीं भोगता है।

47.सकल चराचर रूपःजो किसी के भी पक्ष में नहीं है। सर्व जगत व्यापी है।

48.परमात्मा : जो सर्वोच्च है। जो अतीत है।

विग्रह भगवान है क्या?

शुरुआत से ही अनेक पीढ़ियों से भगवान के बारें में उचित अवगाहना ना करके, भगवान को एक रूप का आकर देकर उसी रूप की आराधना करते हुए, विग्रह को ही भगवान मानकर, इस भ्रम में मानव अमूल्य जन्म की शक्ति और समय व्यर्थ कर रहा है। इतना ही नहीं, जिसे पूज रहा है उसे पा भी नहीं रहा है।

इच्छाएँ पूरी नहीं हों तो निराश होकर, क्रोधित होकर, आखिर में उस भगवान के लिए ही मत बदल रहा है। भगवान की निंदा कर रहा है। 'हमारा भगवान - आपका भगवान' यह झगड़ा कर रहा है। 'हमारा मत - आपका मत' इससे द्वेष भाव को बढ़ा रहा है। अंत में भगवान से ही रुष्ट हो रहा है।

भगवान की अनंत शक्ति को जानने के लिए हम प्रयत्न ही नहीं कर रहे हैं। उनके बारें में ना जानकर, उनके आत्मतत्व को ना समझकर, उनकी आराधना का फल शून्य समान ही होगा।

उनके निजी तत्व को जानकर, आराधना करने से ही धन्य हो सकते हैं। अवगाहना के लिए भगवान को कैसी भावना से देखना चाहिए? विग्रह में तथा भगवान के आत्मतत्व में क्या फर्क है? यह हम जानेंगे।

भगवान	विग्रह
1.सकल चराचर सृष्टि में व्यापन करनेवाला।	1.एक ही जगह पर रहनेवाला।
2.निराकार - जिसका आकार नहीं है।	2.जिसका आकार है।
3.निर्गुण - जिसमें गुण नहीं है।	3.जिसमें काला, सफ़ेद इत्यादि गुण हैं।
4.नामरहित - जिसका नाम नहीं है।	4.जिसका नाम है।
5.मुखरहित - जिसका मुख नहीं है।	5. जिसका मुख है।

भगवान	विग्रह
6.निदेह - जिसका देह नहीं है ।	6.जिसका देह है।
7. अपरिमित-जिसका परिमाण नहीं है ।	7.जिसका परिमाण है ।
8. श्रवणहिन - जिसके कान और नेत्र नहीं हैं।	8.जिसके कान और नेत्र हैं।
9. अकल्पित - जिसको कल्पित नहीं कर सकते।	9.जिसको कल्पित कर सकते हैं।
10.स्वयंसिद्ध-जिसका आकर नहीं हैं।	10.जिसका आकर सृष्टि कर सकती है।
11.अभोक्त - जो भोगकर भी भोगता नहीं है।	11. जो भोगों को पा रहा है।
12.अविनाशी - जिसका नाश नहीं है।	12.जिसका नाश है।
13. अनंत - जिसका आरंभ और अंत नहीं है।	13.जिसका आदि और अंत है।
14.तेजवंत - जिसमें कोटि तेजों की कांति है।	14.जो कांतिहीन है।
15.जिसके जन्म और मरण नहीं है।	15.जन्म और मरण है।
16.परिपूर्ण - जो पूर्ण रूप से भरा हुआ है।	16.जो अपरिपूर्ण है।
17. जो बदलता नहीं है।	17.जो बदलता है।
18. अनंत शक्तिस्वरूप - जिसकी शक्ति अनंत है।	18.जिसमें शक्ति नहीं है।
19.जिसे भौतिक रूप से नहीं देख सकते।	19.जिसे भौतिक रूप से देख सकते हैं।

भगवान का एक भी लक्षण विग्रह में नहीं है। इसलिए विग्रह भगवान नहीं है यह समझना है। विग्रह की आराधना करना भगवान की आराधना करना कैसे हो सकता है? यह स्वयं आप ही सोचिए।

भगवान की आराधना करने से कष्ट कैसे मिटेंगे? इच्छाएँ कैसे परिपूर्ण होंगी? आखिर में निराशा ही प्राप्त होगी। निराश होकर विग्रह का फोटो बदलने से, मन को बदलने से कुछ नहीं होता है। भगवान धरती में, हर मानव में, हर जीव में, आत्मस्वरूप में स्थित हैं। जो आत्मा की आराधना करते हैं, आत्मा के ऊपर दृष्टि रखते हैं, वही भगवान की आराधना करते हैं। भीतर की आत्मा को पाने के लिए अंतर्मुख होना है। जिसके लिए एक ही मार्ग ब्रह्मर्षि पितामह पत्री जी द्वारा बताया हुआ 'श्वास के ऊपर ध्यान' - यानि ध्यानमार्ग है। इसलिए ध्यान करना ही भगवान की आराधना करना होता है। इसी से भगवान के अनुग्रह को प्राप्त करके हमारे जीवन को धन्य कर सकते हैं।

सच्ची आराधना

'आत्मा की आराधना ही भगवान की आराधना है' यह श्रीमद भगवद्गीता में बताया हुआ विषय है। मैं सारें जीवों में सदा आत्मरूप के अस्तित्वरूप में हूँ। मानव ने मेरी प्रतिमा की अर्चना करना शुरू की। सकल जीवों में, आत्मरूप में, मेरे अस्तित्व को ना जानकर जो मुझे प्रतिमा के द्वारा आराधते हैं; ऐसे लोगों की अर्चना 'भस्म में डाले हुए यज्ञ द्रव्य' जैसे निष्प्रयोजन समान होती है।

'जो अलग-अलग शरीरों में अंतर्यामी है, मुझसे द्वेष रखता है, वैसा मन शांति को पा नहीं सकता।'

'दूसरों का अपमान करके, उच्च द्रव्य से मेरी प्रतिमा की पूजा करने से मैं संतुष्ट नहीं होता हूँ। अपने ह्रदय में और अन्य जीवों में जो मेरे अस्तित्व को नहीं जानता वही मेरी प्रतिमा के रूप की अर्चना करता है। ऐसे लोग मृत्यु के भय में रहते हैं। समस्त जीवों के शरीरों को आलय करके रह रहा हूँ; यह समझकर समदृष्टि से, मैत्रीभाव से, गौरव देकर कर्म करें।

विग्रहराधना नहीं निग्रहराधना करनी है

भारत देश में विग्रहराधना लोकप्रिय है। पीढ़ियों से भगवान की आराधना करनेवाला मार्ग यही है इसी भावना में लोग जी रहे हैं। भगवान का रूप नहीं है जानकार भी रूप की ही आराधना करते हैं। भगवान का रूप कैसा होता है? जिसको देख सकते हैं वह भगवान कैसा होता है? यह प्रश्न पूछने पर भी उत्तर समझ नहीं आता है।

तरह-तरह से विग्रहराधना करते हैं। इसका क्या फायदा? विग्रहराधना करना भगवान की आराधना करने जैसा है क्या? यह कोई नहीं सोचता है। विग्रह में भगवान हैं तो दर्शन करनेवाले, मतलब विग्रह तक जानेवाले, वापस घर क्यों आते हैं? भगवान का दर्शन करने के बाद उन्हें छोड़कर वापस आ सकते हैं क्या? उनको वापस छोड़कर आनेवाला उनका भक्त कैसे हो सकता है? विग्रह को छोड़कर आ रहे हैं मतलब विग्रह भगवान नहीं है, यही ना?

विग्रह को खुद हमने ही बनाया है। इंसान भगवान को बना सकते हैं क्या? भगवान को बनाने की शक्ति हममें है क्या? भगवान को बना सकते तो हम ही खुद भगवान से बढ़कर ना हो जाते क्या? भगवान को बनाने की शक्ति होती तो हमारी इच्छाएँ हम खुद पूरी नहीं कर पाते? हमारे कष्टों को हम खुद दूर नहीं कर पाते? हमारे बनाए हुए विग्रह की ही प्रार्थना कर रहे हैं।

भगवान अकल्पित हैं ना? फिर जो कल्पना हमने की है वह भगवान कैसे हो सकते है? जो भगवन नहीं हैं उनकी आराधना करने से भगवान की आराधना करने जैसा कैसे हो सकता है? विग्रहराधना करनेवालों को प्रश्न करने पर वह बोलते हैं 'तुम जो बोल रहे हो वह सत्य है' लेकिन विग्रहराधना की एक वजह है। विग्रह भगवान नहीं है लेकिन "विग्रह - निग्रह के लिए और कुछ नहीं है" यह समाधान देते हैं। ऐसे विग्रह - निग्रह बोलनेवालों का निग्रह से क्या

मतलब है? उससे हमें प्रयोजन क्या है? इसका सही समाधान नहीं दे पाते हैं। लेकिन इस विषय पर ब्रह्मर्षि पत्री जी को समाधान पूछने पर वे निग्रह का एक उदाहरण देते हैं। ग्रह मतलब ग्रहण करना, विग्रह मतलब बिना ग्रहण करे रहना। हम सब विषयों को ग्रहण करते हैं। वैसे ही मन से कुछ भी ना ग्रहण करना ही विग्रह है। इसलिए विग्रह पाने के लिए विग्रह की आराधना करने से कुछ नहीं होता है। 'श्वास के ऊपर ध्यान' रखने से ही आता है। श्वास के ऊपर ध्यान करके विग्रह करना ही निग्रह है।

ध्यान के द्वारा ही दुःख शाश्वत रूप से दुर होता है, विग्रहराधना से नहीं। ब्रह्मर्षि पत्री जी उसका विवरण करते हैं। इसी विषय को 18 आदर्श सूत्रों में पिरामिड मास्टर्स को बताया गया है।

श्रीमद भगवद्गीता में भगवान द्वारा अपने बारे में दिया हुआ संदेश

भगवान कौन हैं? वो कैसे होते हैं? उनकी आराधना कैसे करनी चाहिए? किस प्रकार आराधना करने से उनकी सही आराधना करने जैसा होगा? क्या सगुण उपासना करनी है या निर्गुण उपासना करनी है? इस तरह के प्रश्नों पर समाज में तरह-तरह के अभिप्राय होते रहते हैं।

बहुत लोग समझते हैं कि पूर्व से चलती आ रही सगुण उपासना सही मार्ग है। सगुण उपासना का मतलब विग्रह आराधना है। बहुत लोग हैं जो डरते रहते हैं कि विग्रह आराधना नहीं करने की वजह से भगवान उन पर गुस्सा हो जाएंगे। क्या भगवान सच में गुस्सा होते हैं? विग्रह आराधना करने वालों के बारे में भगवान के भाव जानने के लिए 'ज्ञानेश्वरी भगवद्गीता' में श्री ज्ञानेश्वर जी द्वारा दिया गया विवरण जानेंगे। इस श्लोक के द्वारा श्री कृष्ण भगवान के संदेश को जानेंगे।

अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम् ।। (भ.गी. 9-11)

भावार्थ : मेरे परमभाव को (गीता अध्याय 7 श्लोक 24 में देखना चाहिए) न जानने वाले मूढ़ लोग मनुष्य का शरीर धारण करने वाले मुझ संपूर्ण भूतों के महान ईश्वर को तुच्छ समझते हैं। अर्थात अपनी योग माया से संसार के उद्धार के लिए मनुष्य रूप में विचरते हुए मुझ परमेश्वर को साधारण मनुष्य मानते हैं।

श्री ज्ञानेश्वर जी का विवरणः अर्जुन! वास्तव में तुम्हें मुझसे अनुराग है, तो तुम्हें इस तत्व विचारण को अच्छी तरह और प्रयत्नपूर्वक तरीके से याद रखने की जरूरत है। जिस इंसान को पीलिया रोग होता है उसे स्वच्छ चंद्रमा भी पीला दिखता है और मेरे निर्मल रूप में भी उसे दोष दिखाई दे सकता है या

बुखार की वजह से जुबान का स्वाद बदलने वाले को दूध भी कड़वा लग सकता है। इसी तरह मेरे इंसान न होने पर भी लोग मुझे इंसान की तरह समझ रहे हैं। इसलिए हे अर्जुन! इस रहस्य ज्ञान को न भूलने के लिए तुम्हें बार - बार बता रहा हूँ।

इस रहस्य ज्ञान के बिना अवलोकन व्यर्थ है। अवलोकन से देखने का मतलब मुझे देखना नहीं है। इसलिए स्वप्न में अमृत पीने वाला कभी भी अमर नहीं हो सकता।

लोग मुझे बाह्य दृष्टि से देखते हैं और सिर्फ मेरे बाह्य रूप को जानते हैं, लेकिन पानी में दिख रहे नक्षत्र के प्रतिबिंब को रत्न समझकर उसे पाने की चाहत से, धोखे में बर्बाद होने वाली हंस की तरह, इस बाह्य ज्ञान की वजह से यथार्थ ज्ञान को प्राप्त नहीं कर पा रहें हैं।

मृगतृष्णा को गंगा की तरह समझकर उसके पास जाने की वजह से हमें क्या लाभ हो सकता है? लिली फूल के झाड़ को कल्पवृक्ष मानकर हाथ में रखने से लाभ क्या है? कालसर्प को दो लड़ो का नीलमणि हार समझकर हाथ में रखने से या सफेद पत्थर को रत्न मानकर संग्रह करने से, या जल रही लकड़ियों से आ रही आग की चिंगारियों को गुप्त भंडार समझकर थैली में डालने से, या जैसे शेर के अपने प्रतिबिंब को कुएं में देखकर उसे दूसरा शेर समझकर कुएं में कूदने से, परिणाम क्या होता है?

ठीक इसी तरह, परमात्मा होने वाला, सच में साकार होने वाला, मेरे द्वारा इस प्रपंच का अवतरण हुआ है। इसको दृढ़ निश्चय से मानने वाले, सांसारिक प्रपंच में लीन होने वाले, पानी में चंद्र के प्रतिबिंब को देखकर उसे पाने की कोशिश करने वालों में से हैं। धर्म से जुड़ी हुई इस तरह की बुद्धि और निर्णय व्यर्थ है।

दलिया पीकर अमृत के गुण की आशा करने की तरह, नामरूप न होने वाले अवलोकन को अपने संपूर्ण मन के साथ विश्वास करके उसके अंदर मेरे शाश्वत रूप को देखना भी व्यर्थ है। इस तरह की कोशिश करने से मैं कैसे

दिखूँगा?

पूरब दिशा में चलते हुए क्या कोई पश्चिम दिशा में रहने वाले समुद्र के किनारे पहुँच पाएगा? हे अर्जुन! भूसे को कूटने पर क्या उससे चावल के दाने निकलेंगे?

इसी तरह सिर्फ विकार की वजह से निर्माण हुए अवलोकन आकार को जानने से क्या मेरे निराकार निर्गुण रूप को जान पाओगे?

ठोस जल पीने से क्या प्रभाव पड़ता है? उसी प्रकार, मानव जब अपने मन में मोह पैदा करेंगे तो भ्रांति और भ्रम से इस सारी दुनिया को परमात्मा मतलब मेरी तरह मानेंगे। जिसकी वजह से यहाँ पर जो जन्म और मरण से जुड़े हुए कर्म हैं, वो विश्वास करने लगेंगे की इस तरह का कर्म मुझे भी हो सकता है। इस तरह से बेनाम होने वाले मुझको नाम, क्रियाहीन होने वाले मुझको कर्म और बिना शरीर वाले मुझपर देश के धर्म का आरोपण कर रहे हैं।

निराकार होने पर भी मैं कर्म कर रहा हूँ समझकर, और वर्णनहीन होने पर भी वर्णन के लायक़ समझकर, निर्गुण होने पर भी गुणवान समझकर, हाथ पैर नहीं होने पर भी हाथ पैर आदि होने वाला समझकर, अपरिमित होने पर भी परिमित समझकर, और सर्वव्यापी होने पर भी स्थान विशेष वाला समझकर मुझपर आरोप लगा रहे हैं।

सोते हुए नींद के स्वप्न में जंगल देखने वाले श्रवणहीन लोग समझते हैं कि मेरे अंदर श्रवण है। मेरे पास नेत्र, गोत्र, रूप, आकार, तृप्त, वस्त्र, आभूषण और कारण कुछ ना होने पर भी समझते हैं कि ये सब मेरे पास हैं। मेरे स्वयं सिद्ध होने पर भी वो मेरा विग्रह बनाते हैं। मेरे स्वयंभू होने पर भी वो मेरी प्राण प्रतिष्ठा करते हैं।

हर जगह हर वक्त अखंड रूप से मेरा विस्तार होने पर भी वो मेरा वाहन विसर्जन करते हैं। मेरे स्वयं सिद्ध होने पर भी वो अपनी बुद्धि से मेरी आकृति को बचपन, युवा और वृद्धावस्था से जोड़ते हैं। मेरे द्वैतहीन होने पर भी वो मेरे अंदर द्वैत भावना होने का आरोपण करते हैं। मेरे निष्क्रिय होने पर भी मुझपर

क्रिया आरोपण करते हैं। और मेरे अभूक्त होने पर भी मुझे भोग को अनुभव करने वाला समझते हैं। मेरे कुल या गोत्र कुछ नहीं होने पर भी वो मेरे कुल के बारे में वर्णन करते हैं। मेरे अविनाश होने पर भी मेरी मृत्यु की कल्पना करके वो दुखी होते हैं।

सबके अंदर होने पर भी मुझे सब लोग मित्र और शत्रु के बीच भेदभाव रखने वाला समझते हैं। मेरा आत्मानंद का प्रत्यक्ष निलय होने पर भी वो मुझे विविध तरह के सुख की इच्छा रखने वाला समझते हैं। मेरे हर जगह विस्तार होने पर भी वह मुझे एकदेशी कहते हैं। इतना ही नहीं, वह अंगीकार करते हैं कि मैं सिर्फ कुछ जगह रहता हूँ। मेरे समस्त चराचर आत्मा होने पर भी वो समझते हैं कि मैं सिर्फ एक पक्ष का समर्थन करते हुए, दूसरे पक्ष के लोगों को डराकर उनकी हत्या कर देता हूँ। वो मुझपर आरोप लगाते हैं कि सारे मानव धर्म मेरे अंदर हैं।

इस तरह के लोगों का ज्ञान स्वरूप संपूर्ण रुप से सत्य से बहुत दूर है। वो उनके सामने की किसी भी मूर्ति को देखकर उसे देवता कहते हैं और उस मूर्ति के टूट जाने पर उसे फेंक देते हैं। वो मुझे साकार मनुष्य की तरह मानते हैं। इस तरह का विपरीत ज्ञान, सत्य ज्ञान को अंधकार में रख रहा है, जिसकी वजह से सत्य ज्ञान उनके सामने नहीं आ रहा है।

इस तरह से जो भी भगवान द्वारा कहा गया, उसका 'श्री ज्ञानेश्वर जी' ने बहुत अच्छी तरह से विवरण दिया।

इसलिए भगवान का वास्तविक दर्शन करना चाहिए। उसके अनुसार आराधना करना ही धरती पर भगवान को सही मायने में पहचानना है। अपने अंदर जो आत्मा है उसकी आराधना करना, भगवान की आराधना करने के समान है। आत्मा का दर्शन करना भगवान का दर्शन करने जैसा है। आत्मा की आराधना करने का एकमात्र रास्ता 'आनापानसती' ध्यान है। इस ध्यान को करने का मतलब भगवान की आराधना करना है। इसलिए चलो हम सब मिलकर भगवान की आराधना करके अपने जन्म को धन्य बनाते हैं।

मनुष्य जो करता है।	भगवान जो देखता है ।
1. मनुष्य मूर्ति या फोटो को भगवान समझकर वहीं पर पवित्र ढंग से रहता है। वहीं पर अपनी इच्छा को मांगता है।	1. क्या मानव हर जगह पवित्र है? इस चीज को भगवान देखता है।
2. मनुष्य सब कुछ पाना चाहता है।	2. जो मैंने दिया, क्या वो उसे सबको बांट रहा है? इस बात को भगवान देखता है।
3. मनुष्य तात्कालिक और अशाश्वत चीजों की आशा करते हुए आराधना करता है।	3. भगवान शाश्वत चीजों को कमाने के लिए कहता है।
4. मनुष्य सबसे द्वेष करता है।	4. भगवान देखता है कि क्या मनुष्य सब से प्यार कर रहा है?
5. मनुष्य दूसरों का नुकसान करता है।	5. भगवान देखता है कि क्या मनुष्य दूसरों की मदद कर रहा है?
6. मनुष्य बहुत सारे पाप करता है। मतलब सबको तकलीफ और नुकसान पहुँचाता है।	6. भगवान देखता है कि क्या मनुष्य सबका भला कर रहा है?
7. मनुष्य अपने पाप कर्म और कष्ट को दूर करने के लिए प्रार्थना करता है।	7. भगवान चाहता है कि मनुष्य साधना द्वारा अपने पाप कर्म और कष्ट को दूर करे।
8. मनुष्य आशा करता है।	8. क्या मनुष्य प्रयास कर रहा है? इसके बारे में भगवान देखता है।
9. मनुष्य चाहता है।	9. प्रार्थना के बिना भी सिर्फ अच्छी तरह काम या कोशिश करने पर, भगवान अच्छा नतीजा देना चाहता है।
10. मनुष्य भीख मांगता है।	10. मनुष्य स्वयं सब हासिल करे, भगवान यह चाहता है।

मनुष्य जो करता है।	भगवान जो देखता है ।
11. मनुष्य अनुरोध करता है।	11. भगवान चाहता है मनुष्य मेहनत करे।
12. मनुष्य उपहार देता है।	12. प्रेम, सत्य और धर्म के पालन को भगवान देखता है।
13. मनुष्य दूसरों का उत्थान करने को कहता है।	13.भगवान उत्थान करना चाहता है।
14. मनुष्य पूजा करता है।	14. क्या मनुष्य अच्छे काम कर रहा है? इस चीज को भगवान देखता है।
15. मनुष्य भजन करता है।	15. क्या मनुष्य दुनिया की सेवा कर रहा है? इस चीज को भगवान देखता है।
16. मनुष्य श्लोक पढ़ता है।	16. भगवान गुणों को देखता है।
17. मनुष्य नाम का जाप करता है।	17. क्या मनुष्य ने अपने मन के अंदर की मलीनता को साफ किया है? इस बात को भगवान देखता है।
18. मनुष्य आचार के नाम पर अपने देह और वस्त्र को साफ करता है।	18. क्या मनुष्य ने बुरे दरवाजों को बंद कर दिया है? इस बात को भगवान देखता है।
19. मनुष्य अपने सिर को मूंडता है।	19.काम के पीछे मनुष्य की भावना क्या है? इस बात को भगवान देखता है।
20. मनुष्य अपने काम को प्रधान मानता है।	20. क्या भावना खूबसूरत है? इस चीज को भगवान देखता है।
21. मनुष्य अपने देह को सुंदर बनाकर मंदिर जाता है।	21. क्या अंतरमन शुद्ध है? इस बात को भगवान देखता है।
22. मनुष्य बाह्य शुद्धिकरण को जरूरी मानता है।	22. इस बात को भगवान देखता है कि क्या मनुष्य ने अपने गुणों को ठीक किया है?
23. मनुष्य सबको अलग - अलग नजर से देखता है।	23. भगवान देखता है कि क्या मनुष्य सबको एक नजर से देख रहा है?

भगवान का अवगाहन करना है

इस दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं। भगवान का अवगाहन करने वालों को 'योगी' कहते हैं। भगवान का अवगाहन नहीं करने वालों को 'भोगी' कहते हैं। चलो देखते हैं भगवान के प्रति किसका व्यवहार किस तरह से होता है।

भगवान के बारे में	अवगाहन नहीं करने वाला	अवगाहन करने वाला
1. भगवान निराकार है। (आकार नहीं होने वाला)	1. निराकार भगवान की आराधना करने का मौका ना होने की वजह से किसी न किसी रूप की आराधना करने वाला।	1. निराकार भगवान को आत्मस्वरूप समझकर ध्यान के द्वारा आत्मा पर दृष्टि रखकर आराधना करने वाला।
2. नामरहित है। (कोई भी नाम नहीं होने वाला)	2. नाम नहीं होने वाले भगवान की किसी न किसी नाम से पूजा, प्रार्थना और जाप करते हुए भगवान की आराधना कर रहा हूँ समझने वाला।	2. नामरहित भगवान स्वरूप आत्मा पर ध्यान द्वारा दृष्टि रखकर सही तरह से आराधना करने वाला।
3. अंतर्यामी है। (सर्वत्र, सर्व में, मतलब मानवों में और समस्त जीवो में अंतर्यामी की तरह रहने वाला)	3. भगवान सिर्फ मंदिर में होता है समझकर, सिर्फ उसी जगह पर पवित्र रहने वाला।	3. भगवान सब के अंदर, सभी जीवों के अंदर है। इस भावना से सबको प्यार करने वाला।
4.अनंत शक्ति स्वरूप है।	4. भगवान को मंदिर, चर्च और मस्जिद तक परिमित करने वाला।	4. वह जानता है कि भगवान की शक्ति अपार है इसलिए हर जगह वो पवित्र रहता है।
5. अखंड तेज वाला।	5. मनुष्य दर्शन करने के लिए भौतिक आँखों से देखने की कोशिश करता है पर नहीं देख पाता है।	5. दर्शन करने के लिए ध्यान करता है। अंतर नेत्र मतलब दिव्य चक्षु से देख सकता है।

भगवान के बारे में	अवगाहन नहीं करने वाला	अवगाहन करने वाला
6. रागद्वेष नहीं होने वाला। (अनुराग या द्वेष नहीं होने वाला)	6. भगवान की पूजा, प्रार्थना, नमाज, भजन नहीं करने पर डरता है कि कहीं भगवान उससे गुस्सा न हो जाए। पूजा को ज्यादा मुख्य समझता है।	6. वो जानता है कि भगवान को राग द्वेष नहीं है इसलिए वो पूजा करने वाले को और न करने वाले को अलग नजर से नहीं देखता। पक्षपात नहीं दिखाता। इसलिए पूजा से ज्यादा भगवान को पसंद होने वाले गुणों को मुख्य समझता है।
7.द सच्चिदानंका स्वरूप है। (नित्य आनंद से रहने वाला)	7. भगवान आनंद स्वरूप है। अपने मानव होने को अपने सारे दुखों का कारण समझता है।	7. वह अपने आप को सच्चिदानंद स्वरूप समझता है। इसी जागरूकता से ध्यान करता है और नित्य आनंद में रहता है।
8. दयामय, करुणामय और प्रेम स्वरूप है।	8. भगवान दयामय, करुणामय और प्रेम स्वरूप है। इसलिए बहुत सारे पाप करने पर भी माफ कर देता है, ऐसा सोचते हुए, बहुत सारे पाप करता रहता है। पापों का प्रायश्चित करने के लिए पूजा, प्रार्थना और नमाज करता है, जीव हिंसा करता है, मांस का भक्षण करता है। उन पापों की वजह से आने वाले रोगों से दुखी होता है।	8. भगवान करुणामय नहीं है। पाप करने वालों के प्रति और दूसरे जीवों के साथ हिंसा करने वालों के प्रति कठोर व्यवहार ही नहीं, उन्हें दंडित भी करता है मतलब 'भगवान दुष्ट को दंडित और शिष्ट को रक्षित' करता है। हिंसा नहीं करता, मांस भक्षण नहीं करता, आनंद के साथ जीता है।
9. निर्गुण है। (किसी भी तरह के गुण ना होने वाला)	9. समझता है कि भगवान गुणी हैं। आराधना करने पर इच्छा पूरी करता है। इसलिए बहुत पूजा करता है और इच्छा मांगते रहता है।	9. भगवान गुणातीत है इस जागरूकता से 'जो हमें करना है अगर हम उसे करेंगे तो जो हमें मिलना है वो हमें मिलेगा' और 'ध्यान साधना' करने को ज्यादा महत्वपूर्ण समझता है। ज्यादा इच्छा नहीं मांगता है।

भगवान के बारे में	अवगाहन नहीं करने वाला	अवगाहन करने वाला
10. आत्म स्वरूप है। (सभी जीवो के अंदर रहने वाला)	10. भगवान कहीं और है समझता है। दूसरे जीव और दूसरे लोगों को भगवान से अलग समझता है। इसलिए उनसे नफरत करता है, उनको धोखा देता है, उनकी हिंसा करता है, उनकी बेइज्जती करता है।	10. सब में और सभी जीवों के अंदर जो है वही भगवान स्वरूप है, इस जागरूकता के साथ वो किसी से नफरत नहीं करता है।
11. आदि, मध्य, अंत रहित। (आदि अंत नहीं होने वाला)	11. जागरूकता के बिना मूर्ति और प्रतिमा को मंदिर तक परिमित करके सिर्फ वही आराधना करता है।	11. सर्वत्र भगवान का अस्तित्व है। इसलिए वह हर जगह ध्यान करता है।
12. सर्व जीवों का शक्ति प्रदाता।	12. जागरूकता नहीं होने की वजह से सफल होने पर अपने आप को महान समझकर अहंकार से व्यवहार करता है।	12. सब कुछ भगवान ही है इसलिए इंसान के अंदर अहंकार और गर्व नहीं होता है।
13. सब कुछ स्वयं होनेवाला।	13. मेरा है, हमारा है, कहते हुए हर एक चीज को पसंद करने लगता है।	13. मेरा और हमारा कुछ भी नहीं है। वो परमात्मा ही सब कुछ है इसलिए किसी भी चीज को जरूरत से ज्यादा पसंद नहीं करता।
14. निश्चल है। (स्थिर)	14. भगवान और अपने आप को अलग समझता है। जिसकी वजह से कुछ भी होने पर हैरान हो जाता है।	14. 'अहम् ब्रह्मास्मि' अर्थात उसने परमात्मा के बारे में जान लिया है इसलिए कुछ भी होने पर हैरान नहीं होता है।
15. शाश्वत है। (जन्म और मरण नहीं होने वाला)	15. वो भगवान से अलग है इसलिए मर जाएगा ऐसा समझते हुए मौत से डरता है।	15. आत्म तत्व के बारे में जागरूकता होने की वजह से अपने आप को भगवान समझने से नहीं डरता।

भगवान के बारे में	अवगाहन नहीं करने वाला	अवगाहन करने वाला
16. वो वर्णनातीत है।	16. भगवान का वर्णन करने की कोशिश करता है।	16. भगवान का कोई भी वर्णन नहीं कर सकता इसलिए वह भगवान को महसूस करने के लिए ध्यान करता है।
17. उसका दर्शन नहीं कर सकते हैं।	17. प्रत्यक्ष से दर्शन करने की कोशिश करता है और बेकरार होता रहता है, लेकिन कभी भी सफल नहीं हो पाता।	17. जिसका आकार नहीं होता उसका दर्शन नहीं कर सकता। इसलिए भगवान को महसूस करने के लिए ध्यान करता है।
18. वह अतीत है।	18. भगवान के बारे में सब कुछ जानने वालों के जैसा बर्ताव करता है।	18. भगवान के बारे में पता लगाना असाध्य है इसलिए सिर्फ ध्यान करता है।
19. वह सर्वव्यापी है। (सर्व जीवों में है)	19. जागरूकता नहीं होने की वजह से दूसरों के पैर पड़ता है।	19. अपने साथ-साथ सभी लोग भगवान के स्वरुप हैं जानकार वो किसी के पैर नहीं पड़ता।
२०. वो जगन्नाटक सूत्रधारी है। (जो इस दुनिया नामक नाटक को चलाता है)	२०. वो इंसान इस बात को नहीं समझता कि इस दुनिया नामक नाटक की रचना करनेवाला भगवान है और वो खुद इस नाटक में एक पात्र है। जो कुछ भी उसके द्वारा देखा गया उस सब को सच समझ बैठता है। उसके पास जो कुछ भी है उसे देखकर गर्व महसूस करता है।	२०. ये सब भगवान द्वारा रचाया नाटक है और वो जानता है कि इस नाटक में वो सिर्फ एक पात्र निभाने के लिए आया है। कुछ भी होने पर दुखी नहीं होता है। उसके पास जो कुछ भी है उसे देखकर गर्व नहीं महसूस करता है। सिर्फ काम करने पर ध्यान देता है। उसके नतीजे की आशा नहीं करता।

सच्चा देवालय

अक्सर हम बच्चों से मंदिर जाने के लिए कहते हैं। भगवान का मंदिर समझकर न जाने कहाँ-कहाँ जाते रहते हैं। लेकिन असली देवालय क्या है यह नहीं जान पा रहे हैं।

आलय का मतलब रहने वाला प्रदेश है। देवालय का मतलब भगवान के रहने वाला प्रदेश है। असली भगवान असली देवालय में होते हैं। इसलिए सबसे पहले हमें पहचानना चाहिए कि भगवान कहाँ पर हैं? जहाँ भगवान होते हैं उस आलय पर हमें जाना चाहिए। इसके अलावा अगर हम ऐसे आलय में जाते हैं जहाँ पर भगवान नहीं होते तो इसका फायदा क्या है?

असली देवालय को पहचानने के लिए सबसे पहले हमें जानना चाहिए कि भगवान कौन हैं? और वह कहाँ होते हैं? धरती पर भगवान को पहचानने और भगवान को पाने का मार्ग सिर्फ एक है, वो यह है कि भगवान हर किसी के अंदर आत्मा के रूप में बसे हुए हैं। इस बात को भगवद्गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने बताया है। इसका मतलब हमारे शरीर में जो आत्मा है वही भगवान है। इसलिए 'जिस शरीर में आत्मा है वही असली देवालय है।' आदि शंकराचार्य जी ने कहा है 'देह ही देवालय है और जीव ही देव है।'

भगवान कहीं बाहर नहीं हैं, भौतिक आँखों से भगवान को नहीं देख सकते हैं। भगवान का रूप नहीं है। इसलिए बहिर्मुखी तरीके से बाहर ढूंढने की जरूरत नहीं है। अंतर्मुखी होकर अंदर ढूंढना है। मतलब अंतर्मुख होना चाहिए। यही ललिता सहस्त्र में दिया गया संदेश है। 'सुदरलाभ अंतर्मुखी समाराध्या बहिरमुखा पर', मतलब 'मैं भीतर मिलता हूँ, बाहर नहीं।' इसलिए जब हम हमारे शरीर के अंदर प्रवेश करेंगे, तभी हमारा देवालय के अंदर प्रवेश करने जैसा होगा।

देह के अंदर प्रवेश करने का एक रास्ता है, आँख बंद करके 'श्वास पर ध्यान' देना। ध्यान के द्वारा भगवान के आलय में कोई भी प्रवेश कर सकता है।

'श्वास पर ध्यान' रखने से तरह-तरह के बाह्य प्रपंच से जुड़ी हुए बातों पर ध्यान नहीं जाएगा। इस तरह से मन को निश्चल और निर्मल रखने से भगवान के मंदिर में रहेंगे और भगवान के साथ रहेंगे। धीरे-धीरे उस भगवान का दर्शन मतलब 'आत्मदर्शन' भी मिलता है। तब हमारे सारे पाप जलकर राख हो जाते हैं और हमें मोक्ष मिलता है। हमारा जन्म धन्य हो जाता है। हम 'जीवन मुक्त' हो जाते हैं।

मंदिर कहीं और नहीं है। हमें समझना चाहिए कि हमारा पवित्र शरीर सच्चा देवालय है। हमारे शरीर के अंदर मांस, शराब और जानवरों के शव डालकर उसे अपवित्र नहीं करना चाहिए। ध्यान करना चाहिए।

भगवान को पहचानने का एकमात्र मार्ग

भगवान निराकार, सर्वांतर्यामी, सर्व शक्तिशाली, अनंत और तेजोमय हैं। इस तरह भगवान के बारे में हमारे बड़े और पंडित लोग तरह-तरह से वर्णन करते रहते हैं। भगवान के दर्शन करने का मौका और साक्षात्कार करने की शक्ति सिर्फ एक मानव के पास है, हम ऐसा समझते हैं।

हमारी आत्मा भगवान है इसलिए 'आत्मा का दर्शन ही भगवान का दर्शन है!' और 'आत्म साक्षात्कार ही भगवान का साक्षात्कार है!' सिर्फ आत्मा के द्वारा हम भगवान के अस्तित्व को जान सकते हैं। इसके अलावा भगवान के बारे में जानने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है। आत्मा के अलावा और कोई भी रास्ते से भगवान हमें नहीं मिलेंगे।

भगवान को पाने के लिए, दर्शन करने के लिए या मिलने के लिए, हमारे लिए सिर्फ आत्मा का सहारा है। कोई भी हो 'आत्मा की दृष्टि में होने से ही भगवान की दृष्टि में हो सकता है।' आत्मा की भावना में रहना भगवान की भावना में रहने के समान है। आत्मा को याद रखना भगवान को याद रखने से समान है। हमें जानना है कि जो आत्मा को पाने की कोशिश करते हैं वही भगवान को पाने की कोशिश करने वालों में से हैं।

आत्मा की दृष्टि में यानि भगवान की दृष्टि में रहने का एकमात्र मार्ग 'श्वास पर ध्यान देना' है, क्योंकि आत्मा बाहर की दुनिया में कहीं पर भी नहीं मिलती है। दुनिया के किसी भी कोने में ढूंढने से आत्मा नहीं मिलती। ये हमारे लिए नामुमकिन है। अगर ऐसा होने का मौका होता तो मनुष्य कब का उसे हासिल कर चुका होता।

आत्मा का मतलब भगवान हर किसी के अंदर हैं। इसलिए बाह्य दृष्टि से नहीं, अंतर्दृष्टि से देखना चाहिए। बाह्य अन्वेषण से नहीं, अंतर अन्वेषण से देखना चाहिए। बाह्य चक्षु से नहीं, सिर्फ दिव्य चक्षु से भगवान का दर्शन कर

सकते हैं।

इसलिए गीता बोध के समय भगवान के अपने विश्वरूप यानी असली सत्य रूप को दिखाने पर अर्जुन उन्हें अपनी साधारण आँखों से नहीं देख पाए।

बाद में भगवान ने अर्जुन को दिव्य नेत्र प्रदान किया जिसके द्वारा उसने भगवान को देखा।

अगर हम गौर करेंगे तो पता चलेगा कि ध्यान साधना के द्वारा अंतर्मुख होने वाले कई लोगों ने भगवान का यानि आत्मा का दर्शन दिव्य नेत्र हासिल करने के बाद किया है। इस तरह ध्यान के द्वारा भगवान का दर्शन यानि आत्मा का दर्शन किसी को भी मिल सकता है।

भगवान को पाने का मार्ग सिर्फ 'ध्यान' है। इसके अलावा कोई दूसरा रास्ता नहीं है। आत्मा पर ध्यान रखना भगवान पर ध्यान रखने जैसा है, मतलब ध्यान करना भगवान पर दृष्टि रखने जैसा है। चाहे कितनी भी पूजा, भजन, प्रार्थना और नाम जाप कर लो, लेकिन बहुत जन्म लेने पर भी हम भगवान को नहीं पा सकते हैं। हम भगवान की दृष्टि में नहीं हो सकते।

सिर्फ दिल्ली जाना चाहने से हम दिल्ली नहीं पहुँच जाएंगे। दिल्ली जाने वाली ट्रेन में बैठना होगा। बैठने के बाद ही हम दिल्ली पहुँच पाएंगे। दिल्ली की ट्रेन में बैठे बिना हम कभी भी दिल्ली नहीं जा सकते हैं। ठीक इसी तरह अगर हम भगवान का दर्शन करना चाहते हैं तो हमें ध्यान करना चाहिए। ध्यान करने से किसी न किसी दिन हम भगवान का दर्शन जरूर कर सकते हैं। ध्यान के बिना हम कभी भी, कितने भी जन्म लेने पर भगवान का दर्शन नहीं कर सकते।

हमें जानना चाहिए कि धरती पर 'भगवान को पहचानने का एकमात्र मार्ग आत्मा है।' इसलिए जो भगवान के दर्शन चाहता है उसे मौका मिलने पर नहीं, मौका बनाकर ध्यान करना चाहिए।

आत्मा की दृष्टि ही भगवान की दृष्टि है।

भगवान का रूप नहीं है इसलिए किसी भी रूप की आराधना करना भगवान की आराधना करने जैसा होता है। इसी तरह, भगवान का कोई नाम नहीं है इसलिए किसी भी नाम से पुकारने पर भगवान को पुकारने जैसा होता है। इसलिए हमारे पूर्वज कहते हैं कि जो नाम आपको पसंद है उसका स्मरण कीजिए और जो रूप आपको पसंद है उसकी आराधना कीजिए।

हमारे बड़े कहते रहते हैं कि निरंतर किसी नाम का स्मरण करने से या किसी भी रूप पर दृष्टि रखने से भगवान सिर्फ हमें बचाते ही नहीं, हमारी मुश्किलें भी दूर करते हैं जिसकी वजह से हमारा जन्म धन्य हो जाता है।

गौर करने पर समझ आएगा कि मरते समय हर कोई किसी न किसी नाम से, यानि परिवार के लोगों के नाम से या दूसरों के नाम से, किसी न किसी की नजर में तो रहता है। अगर सब कुछ भगवान है तो किसी भी चीज पर दृष्टि रखना भगवान पर दृष्टि रखने जैसा है ना? अगर ऐसा है तो क्या हर किसी को भगवान मिलना चाहिए? भगवान को पाना मोक्ष को पाने जैसा है ना? फिर सभी इंसानों को मोक्ष क्यों नहीं मिल रहा है? अगर सब लोग इतनी आसानी से मोक्ष पा सकते तो मोक्ष प्राप्त करना बहुत आसान होता ना? अगर ऐसा है तो बहुत सारे पाप करने पर भी सब लोगों को मोक्ष मिलना चाहिए ना? क्या मोक्ष इतनी आसानी से प्राप्त हो सकता है? इसका जवाब है नहीं!

क्योंकि हर चीज पर ध्यान रखना भगवान पर ध्यान रखने के समान नहीं है। किसी भी नाम से पुकारना भगवान को पुकारने जैसा और उनकी आराधना करने जैसा नहीं है। उत्तर गीता में इसका विवरण मिलता है :-

शिलामृदाया पात्रे मदैवबुद्धिः प्रकल्पीतः।

अकलपित् स्वयं ज्योतिराआत्मनो देवरा नकिम।। (उत्तर गीता 4-27)

भावार्थ : पत्थर के द्वारा, मिट्टी के द्वारा, लकड़ी के द्वारा बनाई गई मूर्ति के अंदर दैविक बुद्धि का प्राप्त होना कल्पित है, क्योंकि स्वयं ज्योति स्वरूप आत्मा यानि भगवान अकल्पित है। इससे पता चलता है कि वह किसी के भी हाथों नहीं बनाया गया 'परमब्रह्म' है। इसलिए जिन देवताओं को काल्पनिक रूप से बनाया गया है, उनकी हमें किसी भी तरह की जरूरत नहीं है।

पत्थर से, मिट्टी से, या लकड़ी से बनाए गए काल्पनिक मूर्ति की आराधना नहीं करनी चाहिए। स्वयं ज्योति स्वरूप आत्मा के रूप में होने वाले अकल्पित परमात्मा को सत्य समझकर आत्मा की आराधना करनी चाहिए। यही बात इस उत्तर गीता श्लोक के द्वारा हमें पता चलती है।

अर्थात 'आत्म दृष्टि ही भगवान दृष्टि' है। 'आत्म भावना ही भगवान भावना' है। इसके अलावा किसी दूसरी भावना में रहना होता है जिसकी वजह से हम भगवान की दृष्टि में नहीं होते। इसलिए 'भगवान की दृष्टि में रहने के लिए आत्मा की दृष्टि' में रहना बहुत जरूरी है।

इसका एकमात्र मार्ग 'आनापानसती ध्यान' है। ध्यान द्वारा मन को शून्य बनाना आत्मा पर दृष्टि रखने के समान है। आत्मा पर दृष्टि रखना भगवान की दृष्टि में रहने के समान है। इसलिए हमेशा ध्यान करते हुए भगवान की दृष्टि में रहना चाहिए।

विश्वास करना है कि आत्मा ही भगवान है

कुछ लोग तरह-तरह की साधना करते हुए, बहुत सारी किताबें पढ़ते हुए, बहुत सारे गुरु का आश्रय लेते हुए, पंडित और धर्मशास्त्रियों के उपन्यास सुनते हुए जान लेते हैं कि भगवान आत्मस्वरूप है और आत्मा ही भगवान है। समझ जाते हैं कि आत्मा की आराधना करना भगवान की आराधना करने जैसा है और आत्मा का दर्शन ही भगवान का दर्शन है, आत्म साक्षात्कार ही भगवान का साक्षात्कार है। इतना ही नहीं, जानते हैं कि अंतर्यामी होने वाली आत्मा को पाने के लिए और आत्मा की आराधना करने के लिए 'ध्यान साधना' एकमात्र मार्ग है और ध्यान करते रहते हैं।

इस तरह की जिज्ञासा यानि भगवान को पाने की चाहत रखने वालों को एक बात के बारे में गौर करना चाहिए। 'यदभावम् तद्भवती' वाक्य के अनुसार हम जिस तरह की भावना में रहेंगे, उसी तरह की चीज को प्राप्त करेंगे। इसी तरह आत्मा को पाने के लिए निरंतर आत्म भावना में रहना चाहिए। 'विश्वास करना चाहिए कि आत्मा ही भगवान है। सिर्फ ध्यान करना काफी नहीं होता है। संपूर्ण रूप से आत्मा को भगवान समझना चाहिए और विश्वास करना चाहिए। इस तरह से मनसा, वाच, कर्मणा के रूप में आत्मा की आराधना करने वाले ही भगवान की आराधना करने वालों के समान होते हैं।

इसलिए आत्मा भगवान है इस बात को सिर्फ बातों में बताना काफी नहीं है। कर्मों के द्वारा बताना पड़ेगा। जागरूकता होनी चाहिए की मूर्ति सिर्फ एक मूर्ति है और आत्मा भगवान है। इस तरह के विश्वास को अपने मन के अंदर रखने वाले ही आत्मा को यानि भगवान को पा सकते हैं।

मूर्ति के बारे में योगी वेमना ने कहा है :

'शिलालनु चूसी शिवूदानु भावित्रु!
शिलालु शिलाले कानि, शिवूडु कादु!
तानदु लोनी शिवुनी तानएला तेलियाडो
विश्वदाभिराम विनुर वेम!'

हिंदी में :

'पत्थर को देखकर शिव शंकर मत समझो!
पत्थर सिर्फ पत्थर है, शिव शंकर नहीं है!
अपने भीतर के शिव को खुद नहीं पहचानते!
विश्वादाभीरामा सुनो रे वेमा!'

इसलिए सिर्फ बातों में भगवान को आत्मा समझकर, हरकतों से मूर्ति को भगवान मानकर व्यवहार करेंगे तो क्या इसे त्रिकरण शुद्धि कहते हैं? क्या ऐसा करना भगवान की बेइज्जती करने जैसा नहीं है? इस तरह के लोगों को भगवान प्राप्ति कैसे मिलेगी? वो लोग दुखों से बाहर कैसे निकलेंगे?

इसी बात को श्री कृष्ण भगवान ने भगवद्गीता में भी बताया है।

"अवजानन्ति माम् मूढाः मानुषीम् तनुम् आश्रितम् ।
परम् भावम् अजानन्तः मम भूतमहेश्वरम्।।" (भ.गी.9-11)

भावार्थ : मेरे परम भाव को व सर्व प्राणियों के महान ईश्वर अर्थात् पूर्ण परमात्मा को न जानते हुए, मूर्ख लोग मुझे मनुष्य शरीर धारण करने वाला तुच्छ समझते हैं अर्थात् मुझे कृष्ण रूप में समझते हैं।

इसलिए सिर्फ आत्मा ही परमात्मा है, इस बात को बातों में बताना काफी नहीं है। अपनी हरकतों से भी इसे व्यक्त करना बहुत जरूरी है। भावना को समझना चाहिए।

आत्मा भगवान है। इस बात को मनसा, वाच, कर्मणा से विश्वास करना चाहिए। हमारी हरकतें, बातें और विचार एक तरह होने चाहिए। आत्मा को भगवान मानकर, आत्मा आराधना यानि ध्यान साधना करेंगे तो जिस भावना पर हम विश्वास कर रहे हैं वही हमें भगवान बनाएगी। भ्रमर कीटक के नृत्य की तरह जैसे कीटक आवाज को सुनते हुए आखिर में भ्रमर बन जाता है। ठीक इसी तरह हम भी भगवान स्वरुप बन जाएंगे।

किस पर कृतज्ञता दिखानी चाहिए?

जो कोई हमारी मदद करता है उसे हम धन्यवाद कहते हैं। इसी तरह जब किसी की वजह से हमारा भला होता है या उनके द्वारा कोई उपकार मिलता है या कुछ लाभ या खुशी मिलती है तो हम उन्हें धन्यवाद ही नहीं कहते, उस उपकार के लिए उन्हें जिंदगी भर याद भी रखते हैं।

मुश्किलों में आर्थिक मदद करने से, बीमार होने पर सेवा करने से, कोई नौकरी दिलवाने से, किसी पद को पाने का कारण होने पर, विवाह का कारण होने पर, संतान के लिए मदद करने पर, उन्हें हम धन्यवाद कहते हैं और उनके प्रति गौरव भावना से व्यवहार करते हैं।

इसी तरह जब हमारी मुश्किलों का कोई परिष्कार नहीं मिलता, जब हम बीमारी से बाहर नहीं आते, कष्ट में रहने पर हम गुरुओं के पास जाते हैं। उनका आश्रय लेने पर समस्या का परिष्कार होने के बाद, समस्या से बाहर निकलने के बाद, उस गुरु को भगवान के समान मानते हैं। उनके प्रति बेहद कृतज्ञता भाव दिखाते हैं। उनकी आराधना करते हैं। उनको भगवान की तरह मानते हैं और जीवन भर उनकी पूजा करते हैं।

इस तरह की परेशानियों में किसी भी मूर्ति की पूजा करने से या किसी भी फोटो की प्रार्थना करने से अगर हमारी मुश्किल दूर हो जाती है तो उस फोटो और मूर्ति को हम कभी नहीं भूलते। उसकी पूजा करते हैं, उस पर सारे जीवन कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। उस मूर्ति के लिए, फोटो या धर्म के लिए, हम अपनी जान देने के लिए भी सिद्ध हो जाते हैं।

हमारे जीवन में किसी की वजह से बहुत छोटा फायदा होने पर भी हम उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त ही नहीं, उन्हें भूले बिना जिंदगी भर उनकी आराधना करते रहते हैं।

छोटे-छोटे तात्कालिक फायदे की वजह से हम इतना कृतज्ञता भाव

व्यक्त करते हैं। लेकिन हमारे सारे जीवन में फायदा उठाते हुए, हर वक्त फायदा उठाते हुए, हमारे जीवन के सुख, आनंद और वैभव का कारण होने वाले लोगों की हम संपूर्ण तरीके से उपेक्षा करते हैं। उन्हें हम भूल जाते हैं। हमें इस बात की जागरूकता भी नहीं होती कि उनसे हमें कितना ज्यादा फायदा हो रहा है। किसी भी तरीके से उनका धन्यवाद नहीं करते।

हमें सोचना चाहिए कि जो लोग हमारे जीवन का मूल हैं, उनको नजरअंदाज करना हमारे लिए कितने दुर्भाग्य की बात है। उनसे बहुत सारे फायदे उठाकर उन्हें भूलना कितने दुर्भाग्य की बात है। इतना फायदा उठाते हुए भी इस बात का एहसास तक नहीं होने से बड़ी अकृतज्ञता कोई दूसरी नहीं हो सकती। फायदा, प्रयोजन और वैभव पाते हुए भी हम उन्हें भूल जाते हैं। कम से कम अब उन्हें पहचानकर, उनको याद रखकर, उनका आदर करना चाहिए।

हमारी आँखों में कोई कमी आने पर उन्हें ठीक करने वालों के प्रति हम कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। लेकिन जिसने हमें उन आँखों से जिंदगी भर देखने की शक्ति दी है उसको हम भूल चुके हैं। इसी तरह कान में या सुनने में कुछ कमी होने पर उसे ठीक करने वालों को हम याद रखते हैं। लेकिन जिसने हमें जिंदगी भर उन कानों के द्वारा सुनने की शक्ति दी उसके बारे में हम भूल चुके हैं। इसी तरह बात करने के विषय में, बुद्धि के विषय में, जो कमी होती है उसे ठीक करने वाले के प्रति हम कृतज्ञता भाव व्यक्त करते हैं लेकिन उस शक्ति को देने वाले के बारे में हम भूल जाते हैं। इसी तरह हाथ पैर में जो कमी होती है उसे ठीक करने वाले पर हम सारा जीवन कृतज्ञता भाव व्यक्त करते हैं लेकिन जिसने हमें जिंदगी भर के लिए चलने की और काम करने की शक्ति दी है उसके बारे में हम भूल जाते हैं।

हमारे ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का जिंदगी भर काम करने का कारण कौन है? जिन इंद्रियों से हम इतने सारे सुख और भोग अनुभव कर रहे हैं, उनका कारण कौन है? हम मजेदार भोजन कर रहे हैं। जो हमें पसंद है उसकी खुशबू ले रहे हैं। मधुर संगीत सुन रहे हैं। सुंदर दृश्य देखकर आनंद ले रहे हैं।

शारीरिक सुख का आनंद ले रहे हैं। इतने सारे भोग, वैभव, सुख और आनंद उठाते हुए, जो इसका कारण है उसे हम भूल रहे हैं।

इतना ही नहीं, हमें पता लगे बिना और हमारी भागीदारी के बिना हमारे शरीर में लगभग २०० जीवक्रियाएँ होती रहती हैं जिनके ठीक तरीके से चलने की वजह से हम स्वस्थ और सेहतमंद जी पाते हैं। वैभव से जी पाते हैं। इन जीवक्रियाओं में से अगर कोई एक भी ठीक से नहीं हुई तो हमारा बीमारी से बिस्तर पर पड़े रहना निश्चित है। इन सभी क्रियाओं का हमारी जिंदगी में हमेशा चलने के लिए जो शक्ति कारण है उसे हम भूल गए हैं। संपूर्ण तरीके से भूल गए हैं।

हमारे शरीर में जो सारी क्रियाएँ हो रही हैं वो सब 'आत्मा की शक्ति' की वजह से हो रही हैं। हम 'आत्मा' की वजह से वैभव के साथ जी रहे हैं। लेकिन हम इसका कारण होने वाली आत्मा को भूल चुके हैं।

एक बार सोचिए अगर हमारी आत्मा हमारे शरीर से हट जाएगी तो हमारा शरीर शव हो जाएगा। हमारी इंद्रियाँ काम नहीं करेंगी। कुछ घंटों में हमारा शरीर सड़ जाएगा। जिन लोगों ने हमसे उस वक्त तक प्यार किया, वो भी हमारे पास आने से और हमें देखने से डरेंगे। बीवी और बच्चे भी पास नहीं आना चाहेंगे। हम कल्पना कर सकते हैं आत्मा के बिना हमारे शरीर का हाल क्या होगा। हम समझ सकते हैं कि आत्मा की उपेक्षा करना कितना अकृतज्ञता का भाव है।

इसलिए हमारी महान आत्मा के बारे में हमें भूलना नहीं चाहिए। आत्मा के प्रति सारे जीवन कृतज्ञता दिखानी चाहिए। लेकिन हम आत्मा की उपेक्षा करके मूर्ति और दूसरे लोगों की आराधना कर रहे हैं।

सबसे जरूरी जो है, उस आत्मा को हम नजरअंदाज कर रहे हैं। हमारे जीवन में एक बार भी हम उसे याद नहीं कर रहे हैं। आत्मा की वजह से हमें जो फायदा हो रहा है उसके बारे में हमें एहसास तक नहीं है। ये बहुत दयनीय है।

हमें आत्मा के प्रति कृतज्ञता दिखानी है। आत्मा को कभी भी भूलना नहीं है। क्योंकि आत्मा कुछ और नहीं है, वही है जो सृष्टि के जीवन का मूल कारण है और इस सृष्टि का आधार बनकर इस सृष्टि को चला रही है। वही भगवान है। इसका मतलब 'आत्मा ही भगवान है।' आत्मा का विस्मरण करना भगवान का विस्मरण करने के समान है। आत्मा को भूलना भगवान को भूलने से समान है। आत्मा की उपेक्षा करना भगवान की उपेक्षा करने के समान है।

भगवद्गीता में श्री कृष्ण भगवान ने 'अहं आत्मा गुड़ाकेशा' बताया है। मतलब श्रीकृष्णा ने कहा है "हे अर्जुन! इस बात को जान लो कि मैं आत्मा हूँ।" उन्होंने यह नहीं कहा कि वो मूर्ति या फोटो हैं।

हम छोटे-छोटे फायदे या तात्कालिक आनंद का कारण होने वाले लोगों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते और उनकी आराधना करते हैं। लेकिन जिंदगी भर लाभ उठाते हुए हम आत्मा यानि भगवान का विस्मरण करना भूल जाते हैं।

जब हम किसी को कुछ छोटी मदद भी करते हैं तो उनसे हमारे प्रति विश्वास की आशा करते हैं। वह हमें और हमारी मदद को कभी नहीं भूलें ऐसा चाहते हैं। हम आशा करते हैं कि वह हमारे प्रति कृतज्ञता भाव व्यक्त करें। लेकिन जिंदगी भर लाभ उठाते हुए और वैभव पाते हुए भी हम आत्मा को भूल रहे हैं, जिससे हमारी अविश्वसनीयता प्रकट होती है।

इस तरह की महान आत्मा को याद रखना या आत्मा के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का एकमात्र मार्ग 'आनापानासति ध्यान' है। ध्यान करने से ही हमारी दृष्टि आत्मा पर होगी और आत्मा को याद रख पाएंगे। मतलब भगवान को याद रखेंगे और उनकी आराधना कर पाएंगे।

भगवान सबके अंदर आत्मा के रूप में रहकर सबकी मदद करते रहते हैं। इसलिए ध्यान के द्वारा भगवान की आराधना करके हमें कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए। इससे ज्यादा महान कार्य हम जीवन में कुछ भी नहीं कर सकते हैं।

भगवान निराकार हैं

जब हमसे पूछा जाए 'भगवान कैसे दिखते हैं?' तो तुरंत हम जवाब देते हैं कि भगवान निराकार हैं। भगवान का वर्णन पूछने पर हम कहते हैं कि वह अनंत शक्ति स्वरूप हैं और सकल चराचर सृष्टि में विस्तार होने वाले हैं। उनका जन्म मरण नहीं है, उनका आदि और अंत नहीं है, नाम और रूप नहीं है, वह गुण के अतीत हैं, दयामय और करुणामय हैं, तेजोमय हैं, वर्णन के अतीत हैं, कल्पना के बाहर हैं, उनका दर्शन करना नामुमकिन है, और हम कहते हैं कि उन्हें सिर्फ महसूस किया जाता है लेकिन देखा नहीं जाता है। इस तरीके से हम भगवान का वर्णन करते हैं और उनके बारे में बताते हैं।

लेकिन बहुत से लोगों को भगवान की शक्ति नहीं पता होती, जिसकी वजह से वह भगवान की तरह-तरह के रूप में कल्पना करके उनकी पूजा, प्रार्थना और पुण्य क्षेत्र में दर्शन करते रहते हैं और समझते रहते हैं कि उन्होंने भगवान को देखा है और भगवान का दर्शन किया है।

ये सब सिर्फ बेवकूफी है। सच तो यह है कि भगवान को बाह्य जगत में देखना या उनका दर्शन करना नामुमकिन है। भगवान को कठोर ध्यान साधना के द्वारा महसूस कर सकते हैं लेकिन उनका दर्शन नहीं कर सकते।

हम अपनी पत्नी से प्यार कर सकते हैं लेकिन उस प्यार को हम बाहर नहीं दिखा सकते। गुलाब के फूल की खुशबू सिर्फ महसूस कर सकते हैं लेकिन देख नहीं सकते। आम खाकर हम उस स्वाद को महसूस कर सकते हैं लेकिन स्वाद को आँखों से नहीं देख सकते। जब हवा चलती है तो हम उसे स्पर्श के द्वारा महसूस कर सकते हैं लेकिन हवा को देख नहीं सकते। इसी तरह भगवान को महसूस कर सकते हैं लेकिन उनका दर्शन नहीं कर सकते क्योंकि भगवान निराकार हैं और भौतिक नेत्रों से उनका दर्शन करना नामुमकिन है।

जो लोग भगवान को महसूस कर सकते हैं उनकी खुशी वर्णनातीत है, उनकी स्थिति कल्पना के बाहर है, उन लोगों को दुनिया में कुछ भी नहीं चाहिए होता क्योंकि उन्हें पता है कि सारी दुनिया में वही हैं, सब कुछ वही हैं। इस तरह भगवान की अनुभूति पाने पर हम समझ सकते हैं कि हम ही भगवान हैं। जब हम खुद भगवान हैं तो हमें भगवान कहाँ पर दिखेंगे? भगवान को देखना 'अहम् ब्रह्मास्मि' को समझना है। गोद में बच्चे को लेकर, पूरे गांव में उस बच्चे को ढूंढने से वह मिलेगा क्या? इसलिए भगवान को देखना किसी के लिए भी मुमकिन नहीं है।

आत्मानुभूति पाने वाली स्थिति को ही 'आत्म अनुभव' कहते हैं। 'आत्म लब्धि' और 'आत्म साक्षात्कार' भी कहते हैं। आत्म आनंद पाने वाला, 'स्वस्वरुप ज्ञान' पाने वाला, अपने आप के बारे में जानने वाला, 'आत्म ज्ञान' पाने वाले को भी ऐसा कहते हैं। ये सभी एक हैं। हमें इस स्थिति को पाने की कोशिश करनी चाहिए। यह स्थिति पाने का एकमात्र मार्ग 'आनापानसती ध्यान' है।

हमारे उपनिषद में 'अहम् ब्रह्मास्मि' और 'अयम् आत्मा ब्रह्म आत्मा' कहा गया है। इसका मतलब 'मैं ब्रह्म हूँ' यानि 'मैं भगवान हूँ' कहा गया है। उस 'मैं' को 'आत्मा' कहा गया है। मतलब 'मैं, मैं नहीं हूँ', 'मैं आत्मा हूँ' कहा गया है।

आत्मा को कोई भी नहीं देख सकता। भौतिक आँख से या माइक्रोस्कोप से देखना भी नामुमकिन है। आत्मा को सिर्फ महसूस किया जा सकता है। वही आत्मा भगवान है। आत्मा निराकार, अनंत शक्तिशाली और रोशन पदार्थ है। इसलिए निराकार भगवान को पाने के लिए ध्यान करना ही एकमात्र मार्ग है।

भगवान का रूप नहीं है। भगवान निराकार हैं। इस बात को जानकर हमें ध्यान करना है।

भगवान चेतना के अवतार हैं

मूर्ति का मतलब शिला है। पत्थर भी भगवान है लेकिन शिला की चेतना की तीव्र निद्रावस्था से तुलना करते हैं। शिला में गति नहीं होती है जिसकी वजह से मूर्ति की आराधना व्यर्थ होती है। हमारे द्वारा कुछ काम करने से उसका फायदा होना चाहिए, हमारी मेहनत व्यर्थ नहीं होनी चाहिए और हमारा नुकसान नहीं होना चाहिए।

बहुत दिनों से पूजा और प्रार्थना करने पर जब हमें नतीजा नहीं मिलता, तो हम निराश होकर मूर्ति बदल देते हैं। लेकिन बदलने के बाद दूसरी मूर्ति भी शिला ही है ना? तो नतीजे में फर्क कैसे आएगा?

कुछ लोग धर्म भी बदल रहे हैं। जिसके बाद भी आराधना में बदलाव नहीं आता। जीवन में किसी तरह का बदलाव या नतीजा नहीं आता। बदलाव नहीं होने की वजह से सही कर्म नहीं करते और पापी काम करते हैं। जीवन को और भी ज्यादा दुखी बनाते हैं।

श्रीमद्भागवत में भगवान के द्वारा दिया गया संदेश - 'सर्व जीवों के अंदर आत्मा के रूप में, ईश्वर बनकर रहने वाले मेरे अस्तित्व को न जानते हुए, जो मेरी पूजा प्रतिमा के द्वारा करते हैं, उन लोगों की अर्चना ख़ाक में डाले गए यज्ञ द्रव्य की तरह अपशिष्ट है।'

इसके आधार पर हम समझ सकते हैं कि चेतना के बिना जो मूर्तियाँ हैं उनकी आराधना करना व्यर्थ है।

इसी तरह, वृक्ष भी भगवान हैं लेकिन वृक्ष के अंदर की चेतना की स्वप्नावस्था से तुलना की जाता है। वृक्ष गति में रहते हैं लेकिन चलते नहीं है। इसलिए वृक्ष की आराधना करने से कोई भी फायदा नहीं है।

इसी तरह जानवर भी भगवान हैं लेकिन जानवरों के अंदर की चेतना की जागृत अवस्था से तुलना की जाती है। यहाँ पर जानवरों के अंदर गति है और वह चलते भी हैं, लेकिन उनके अंदर की चेतना संपूर्ण चेतना नहीं है, जिसकी वजह से जानवरों की आराधना करने से कुछ भी फायदा नहीं है।

इसी तरह, मानव भी भगवान हैं। मानव के अंदर की चेतना संपूर्ण

चेतना है। जिसकी वजह से भगवान का अस्तित्व आत्मा के रूप में मानव के अंदर ही है। इसलिए आत्म दर्शन को भगवान दर्शन कहते हैं। आत्मा को पाना भगवान को पाने जैसा है।

जो लोग आत्म साक्षात्कार यानी भगवान का साक्षात्कार पाते हैं उनकी खुशी का ठिकाना नहीं होता। इस अनुभूति को सिर्फ महसूस किया जा सकता है लेकिन इसे बातों में नहीं बताया जा सकता। कुछ योगी कहते हैं कि इसे व्यक्त करने के लिए एक शब्द काफी नहीं होता।

इसलिए आत्मा की अनुभूति पाने वाले योगी, काल्पनिक और बातों में न बताए जाने वाली उस आनंद स्तिथि को नहीं छोड़ पाते। जिसकी वजह से वो उसी स्थिति में रह जाते हैं। जिसको समाधि स्थिति कहते हैं।

इसलिए उस स्थिति को पाने वाले, उस आनंद का लुत्फ़ उठाने वाले, समाधि में बहुत दिनों, महीनों और सालों तक उसी तरह से रह जाते हैं। यानि भगवान का दर्शन पाने वाले आनंद अनुभूति को छोड़कर बाहर नहीं आ सकते हैं। कुछ गौर करने पर समझ आएगा कि यहाँ पर हम मूर्ति को भगवान समझकर उसकी आराधना कर रहे हैं। अगर ऐसा है तो मूर्ति का दर्शन भगवान के दर्शन से समान है? अगर वह भगवान का दर्शन है तो हम वहाँ पर बहुत देर तक क्यों नहीं रह पा रहे हैं? क्या इसका कारण सच्चे भगवान के दर्शन की अनुभूति को नहीं महसूस करना है?

अगर सच में मूर्ति भगवान है तो उसके दर्शन के बाद भगवान को यानि मूर्ति को छोड़कर क्या हम आ सकते हैं? छोड़कर आने का मतलब, मूर्ति का भगवान नहीं होने जैसा है ना?

इसलिए आत्मा के रूप में होने वाले चेतना स्वरूप भगवान की आराधना करनी चाहिए। ऐसा करने से हमारे सारे दुख शाश्वत रूप से खत्म हो जाएंगे।

आत्मा की आराधना करने का सिर्फ एक मार्ग है वह 'आनापानसती ध्यान' है। ध्यान करने का मतलब भगवान की आराधना करना है। जिसकी वजह से हम 'भगवान को चेतना स्वरूप' मानकर उनका ध्यान करते हुए भगवान का साक्षात्कार पाते हैं।

भगवान की शक्ति अपार है

इस अनंत सृष्टि में लाखों, करोड़ों लोक हैं, जिसमें कुछ आँखों से दिखाई देने वाले भौतिक लोक हैं और कुछ आँखों को नहीं दिखाई देने वाले सूक्ष्म लोक हैं। जो हम आँखों से देख सकते हैं उन्हें भौतिक लोक कहते हैं। यानि धरती, सूरज, नक्षत्र और चंद्र इन सब को मिलाकर एक पानी का बूंद कह सकते हैं। इस सृष्टि में हमारे द्वारा देखे जाने वाले भौतिक लोक अभी समुद्र जितने हैं।

जब हम पानी की बूंद और समुद्र के बीच के फर्क को जान पाएंगे, तभी हम इस अनंत सृष्टि में कितने सारे भूमंडल, सौर मंडल, करोड़ों ग्रह और विश्व हैं, उनकी कल्पना कर सकते हैं।

सृष्टि में सिर्फ भौतिक लोक ही नहीं, आँखों को नहीं दिखाई देने वाले करोड़ों सूक्ष्म लोक भी हैं। सूक्ष्म लोग भौतिक लोकों से तीन गुना ज्यादा हैं। इसके द्वारा हम समझ सकते हैं कि भगवान के द्वारा सृजन किये गए और उनके द्वारा चलाई जाने वाली सृष्टि, मनुष्य की बुद्धि के परे है। इसके आधार पर हम कह सकते हैं कि भगवान के बारे में या भगवान की शक्ति के बारे में हम समझ नहीं सकते हैं।

इतनी अद्‌भुत और आनंद देने वाली भगवान की सृष्टि में यानि करोड़ों लोकों में असल भूमंडल का अस्तित्व क्या होगा? उनमें से एक खंड कितना होगा? उनमें से एक देश कितना होगा? उनमें से एक राष्ट्र कितना होगा? उनमें से एक जिला कितना होगा? उनमें से एक मंडल कितना होगा? उनमें से एक गांव कितना होगा? सोचेंगे तो उनमें से हमारा घर और हम कितने होंगे? हम कल्पना कर सकते हैं कि इतनी बड़ी अनंत सृष्टि में हमारा अस्तित्व कितना सूक्ष्म है।

हम समझ रहे हैं कि हम बहुत सारे अद्‌भुत आविष्कार कर रहे हैं। कार, हवाई जहाज, रेडियो, टीवी, सेलफोन, कंप्यूटर, अंतरिक्ष जहाज और रोबोट इस तरह की कई चीजों को हमने बनाया है। सिर्फ हमारे द्वारा बनाई गई चीजें बहुत सारे अद्‌भुत चमत्कार दिखा रही हैं, हमें बनाने वाले भगवान की शक्ति की हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं।

सोचने पर हमें पता लगेगा कि हमने जो कुछ भी तैयार किया है वो शाश्वत नहीं है। जो कुछ भी हम महान समझते हैं वो सारी चीजें शाश्वत नहीं हैं। लेकिन

भगवान की सृष्टि करोड़ों सालों से शाश्वत होकर काम कर रही है।

धरती का घूमना, चांद का घूमना, रात और दिन, मौसम का बदलना, इस तरह करोड़ों लोक काम कर रहे हैं। इतना ही नहीं, दुनिया के सारे जीवों के अंदर की प्रक्रिया भी काम करती है। हम समझ सकते हैं कि मानव का शरीर एक अद्‌भुत सृष्टि है।

हम चंद्र मंडल तक पहुँच सके हैं। हम गर्व महसूस करते हैं कि हमने ये कर दिखाया है, वो कर दिखाया है, इसकी सृष्टि की है, इसे तैयार किया है, मैं बहुत बुद्धिमान हूँ, मैं सब कुछ कर सकता हूँ। हम कहते रहते हैं कि यह मेरा है, यह तुम्हारा है। हम समझते रहते हैं कि हमें सब कुछ पता है और हम सब कुछ हासिल कर सकते हैं।

एक बार सोचिए, क्या हम बुढ़ापे को रोक सकते हैं? क्या खूबसूरती को खराब हुए बिना रोक सकते हैं? क्या हमारे बालों का सफेद होना रोक सकते हैं? क्या हम अपने नाखून का बड़ा होना रोक सकते हैं? क्या हम बीमारियों को रोक सकते हैं? क्या हम मौत को रोक सकते हैं? जो घटनाएं हमारे साथ हुई हैं क्या उन्हें हम भूल सकते हैं? क्या हम हमेशा वर्तमान में जी सकते हैं? क्या हम भूख प्यास को हमेशा के लिए मिटा सकते हैं? क्या हम दुख के बिना जी सकते हैं? क्या हम हर वक्त निडर होकर जी सकते हैं? इतनी सारी महान चीजों को हासिल करने वाले हम, क्यों इन सबको हासिल नहीं कर पा रहे हैं? बहुत सारी चीजों को हासिल करने वाले हम, अपने गुस्से पर क्यों काबू नहीं कर पा रहे हैं? क्या हमने ईर्ष्या और द्वेष पर जीत हासिल की है? क्या हमने अपनी इच्छाओं पर जीत हासिल की है? क्या हमने अपने मन पर जीत हासिल की है?

क्या हम झूठ बोलने से अपने आप को रोक सकते हैं? क्या हम जानवरों और दूसरों की हिंसा किए बिना रह सकते हैं? द्वेष के बिना क्यों नहीं रह पा रहे हैं? सबके लिए हमारे अंदर समान भावना क्यों नहीं है? जो कुछ भी हमारे पास है उसके साथ हम संतुष्ट क्यों नहीं हैं? हमारे अंदर के दुर्गुण को क्यों नहीं मिटा पा रहे हैं? आंख बंद करके ध्यान क्यों नहीं कर पा रहे हैं?

इस तरह छोटी-छोटी समस्याओं का हल हासिल नहीं कर पाने वाले हम, समझ रहे हैं कि हमने कुछ महान किया है। इस तरह से समझना बहुत बेवकूफी की

बात है। इतने छोटे होने वाले हम, कल्पना के परे होने वाली आनंद और सकल चराचर सृष्टि को चलाने वाले भगवान की शक्ति को क्या समझ पाएंगे?

इतने शक्तिशाली भगवान को किसी पूजा के मंदिर, चर्च या मस्जिद तक परिमित करना क्या अन्याय नहीं है? अनंत भगवान की शक्ति को नहीं पहचानने वाले हम क्या अज्ञान में नहीं हैं?

इतने महान भगवान को छोटी-छोटी पूजा, प्रार्थना और जप से वश में करने की कोशिश करना, फल और फूलों से उनका अनुग्रह पाने की कोशिश करना, क्या बेवकूफी नहीं है? साधारण इंसान होने वाले हम, जब हमें लोग चने के झाड़ पर चढ़ाने की कोशिश करते हैं तो हम उनकी बातों में नहीं आते हैं। फिर इतने शक्तिशाली भगवान हमारे द्वारा किए जाने वाली तारीफ, पूजा, प्रार्थना और स्त्रोत्र से क्या हमारे बस में हो जाएंगे? इसलिए हमें भगवान की अपार शक्ति को समझना और उसके अनुसार व्यवहार करना चाहिए।

जो इंसान भगवान की पसंद के अनुसार व्यवहार करता है, भगवान उसी के वश में होता है। उसी का अनुग्रह करता है। जो लोग भगवान का अनुग्रह चाहते हैं उन्हें समझना चाहिए कि समस्त भगवान है। उनकी सृष्टि को और सृष्टि में उनके रूप में होने वाले जीवों को प्यार करना चाहिए। हर जीव पर दया और करुणा दिखानी चाहिए। अच्छे गुणों के साथ रहना चाहिए। भगवान की दुनिया के लिए अच्छा करने से ही हम भगवान का अनुग्रह पा सकते हैं।

इसलिए भगवान का सिद्धांत हमें समझना चाहिए। पाप नहीं करना चाहिए। हमें जानना चाहिए कि हम भी भगवान की शक्ति का भाग हैं। हमारे जीवन में जो कुछ भी विधाता का पात्र है उसे हमें निभाना चाहिए। दुनिया को और प्रकृति को प्यार करना चाहिए। प्रकृति के साथ सहजीवन करना चाहिए। ऐसा करने से हमारे अंदर भी शक्ति पैदा होगी। धीरे-धीरे हमारे अंदर दिव्यता पैदा होगी और हम भी भगवान स्वरूप बन जाएंगे। यही मानव जीवन का लक्ष्य है।

इसे पाने के लिए या भगवान के बारे में और उसकी शक्ति के बारे में पता लगाने के लिए ध्यान करना बहुत जरूरी है। सिर्फ ध्यान करने से ही हम सब कुछ जान पाएंगे और समझ पाएंगे। इसलिए चलो हर रोज ध्यान करते हैं।

भक्ति क्या है?

जिस काम को करते वक्त हमारा ध्यान भगवान पर होता है उस काम को भक्ति कहते हैं। जिस काम को करते वक्त हमारा ध्यान भगवान पर नहीं होता उसे भक्ति नहीं कहते हैं।

साधारण रूप से पूजा, भजन, प्रार्थना, स्त्रोत्र और नाम जाप करने को भक्ति कहते हैं, क्योंकि जब हम ये सब करते हैं तो तब हमारा ध्यान भगवान पर होता है। टीवी देखने को या खेलने को या खाना खाने को हम भक्ति नहीं कहते हैं, क्योंकि इन कामों को करते वक्त हमारा ध्यान भगवान पर नहीं होता। इसलिए भक्ति का सही अर्थ 'भगवान पर ध्यान रखना' है।

भगवान पर हम तरह-तरह से ध्यान करते हुए, हमारी इच्छा पूरा करने की प्रार्थना करते हैं। मतलब हमारे दुख, बीमारी और मुश्किलें दूर होकर, बिना परेशानियों के जीने की प्रार्थना करते हैं। हम हमारी इच्छा को पूरा करने के लिए भगवान पर ध्यान रखते हैं और उन्हें याद करते हैं।

भगवान पर ध्यान रखने का कारण इच्छा है। जो ध्यान हम भगवान पर रख रहे हैं, वो सब हमारी इच्छा पूरी होने के लिए है। बाह्य रूप से हम जो कुछ भी प्रदर्शन कर रहे हैं, वो सब हम भगवान पर भक्ति से नहीं कर रहे हैं, हमारी इच्छा को पूरा करने के लिए कर रहे हैं। इस तरह के लोगों की भक्ति 'इच्छाओं के लिए भक्ति' होती है। लेकिन वो 'भगवान की भक्ति' नहीं होती है।

जो बिना इच्छा के भगवान पर ध्यान रखते हैं, सिर्फ उनकी 'भक्ति' ही असली 'भक्ति' होती है। हमारी 'भगवान की भक्ति' नहीं है, क्योंकि हम 'भगवान से' मांग रहे हैं लेकिन 'भगवान को' नहीं मांग रहे हैं।

बिना किसी इच्छा के भगवान पर ध्यान रखना 'असली भक्ति' है, जिसे 'सच्ची आराधना' कहते हैं। सच्चा भगवान कौन है? क्या मूर्ति है? क्या फोटो है? यह दोनों भी नहीं है क्योंकि फोटो और मूर्ति भगवान का प्रतिरूप हैं, लेकिन भगवान नहीं हैं। क्या गांधी जी की फोटो असली गांधी जी हो सकते हैं? नहीं ना!

भगवान पर दृष्टि रखने के लिए, भगवान कौन हैं? कहाँ रहते हैं? यह जानना होगा। हम जान चुके हैं कि वो सबके अंदर आत्म स्वरूप में रहते हैं। इसलिए आत्मा पर दृष्टि रखना भगवान पर दृष्टि रखने के समान है।

आत्मा कौन है? आत्मा हमारा स्वरूप है। इसलिए आत्मा पर यानि हमारे स्वरूप पर दृष्टि रखना ही 'असली भक्ति' है। हमारे स्वरूप से अनुसंधान होना असली भक्ति है।

उसका मार्ग 'श्वास पर ध्यान' है। यानि 'ध्यान करना भक्ति है।' ध्यान के द्वारा हम, हमारी आत्मा के साथ रह सकते हैं। इसलिए उपनिषद में भक्ति का मतलब 'स्वस्वरुपा संधानं भक्ति रित्या भीदियते' कहा गया है। मतलब किसी भी इच्छा के बिना आत्मा पर दृष्टि रखना 'सच्ची भक्ति' है। भगवान से किसी भी चीज की आशा किए बिना ध्यान करना असली 'भक्ति' है। गीता में श्रीकृष्ण भगवान के द्वारा बताया गया 'निष्काम कर्म' यही है।

भक्ति के विविध प्रकार

भगवान को खुश करने को हम भक्ति समझते हैं। हमारी पसंद को तरह-तरह से प्रदर्शित करते हुए हम अपने आप को भक्त समझते हैं। हम समझते हैं कि हमसे ज्यादा महान भक्त कोई भी नहीं है। हम जो भी करते हैं उसे भक्ति समझते हैं। हम समझते हैं कि भगवान के बारे में हमें सब कुछ पता है।

हम मानते हैं कि हम जैसा चाहेंगे भगवान वैसा ही करेंगे। हम जो करेंगे उसे भगवान पसंद करेंगे। हमारी पसंद के मुताबिक हम भगवान की आराधना, पूजा, प्रार्थना और भजन करते हुए समझते हैं कि भगवान इसे पसंद करेंगे। हम कभी नहीं सोचते कि क्या यह सब करने से भगवान हमें पसंद करेंगे या नहीं?

हमारा अपने आप को भक्त मानना काफी नहीं होता है। भगवान को हमें गर्व से अपना भक्त मानना चाहिए। जिस किसी को भी भगवान इस तरह से चाहेगा वही सच्चा भक्त होगा। उसे ही भगवान का अनुग्रह मिलेगा। उसी का जन्म धन्य होगा। जान लीजिए! वही मोक्ष को प्राप्त करेगा।

प्रस्तुत 'सब के लिए भगवान है लेकिन भगवान के लिए भक्त नहीं है।' चलो पता करते हैं कि भगवान की नजर में कौन भक्त है? और असली भक्ति क्या है?

भक्ति में दो प्रकार हैं। (1) भुक्ति के लिए भक्ति (2) मुक्ति के लिए भक्ति। इस दुनिया में ज्यादातर लोग पहले प्रकार के भक्त हैं।

'भुक्ति के लिए' मतलब इच्छा पूरी होने के लिए भगवान की आराधना करना। हमारी जरूरतों, खुशी और भोग पाने के लिए, दुख, समस्या, तकलीफ से छुटकारा पाने के लिए आराधना करना। इस प्रकार के लोगों की जब इच्छा पूरी नहीं होती, जो वह चाहते हैं वह नहीं होता, जिसे भगवान से मांगा है वह

नहीं मिलता तब वह भगवान की तस्वीर बदलकर उसकी जगह कोई दूसरी तस्वीर लगा देते हैं और धर्म भी बदलते हैं।

इसे देखकर हमें समझ आता है कि इनकी भक्ति इच्छा पर है लेकिन भगवान पर नहीं है। इस तरह की भक्ति को 'भुक्ति के लिए भक्ति' कहते हैं।

दूसरी तरह के भक्त बहुत कम लोग रहते हैं। इनके लिए इच्छा प्रधान नहीं है। इनकी बेताबी और बेसब्री भगवान का दर्शन करने के लिए और भगवान तक पहुँचने के लिए है। यह लोग इस दुखी जीवन से बाहर निकलने की कोशिश और चाहत रखते हैं।

इन को किसी भी तरह की इच्छा नहीं होती। किसी भी तरह की आशा नहीं होती। किसी भी तरह का ताप नहीं होता। उन्हें सिर्फ भगवान को पाने की इच्छा होती है। जिसकी वजह से उनके जीवन में बहुत सारी मुश्किलें आने पर भी, यह लोग उन मुश्किलों पर ध्यान नहीं देते। मुस्कुराते हुए मुश्किलों का सामना करते हैं। इनके लिए धन, संपत्ति, भोग, भाग्य, शारीरिक सुख और पद, सब कुछ व्यर्थ है। ये लोग भगवान से कुछ भी नहीं मांगते। हर वक्त भगवान के दर्शन के लिए यानि 'आत्म दर्शन' के लिए और 'आत्म साक्षात्कार' के लिए मेहनत करते हैं। ध्यान साधना करते हैं।

इन लोगों की परीक्षा लेने के लिए जब भगवान इन्हें दुख और मुश्किलें देते हैं और प्रलोभ करते हैं यानि धन, संपत्ति और स्त्री के जरिए आशा दिखाने की कोशिश करते हैं, लेकिन फिर भी यह लोग नहीं मानते। आखिर में सभी परीक्षाओं में सफलता हासिल करके, भगवान का दर्शन पाकर, यानि आत्मसाक्षात्कार होकर मुक्ति पा लेते हैं।

इस तरह जो इंसान बिना किसी इच्छा के यानि प्रतिफल अपेक्षा के बिना भगवान की आराधना करते हैं और भगवान को पसंद करते हैं उनकी ही सच्ची

भक्ति होती है। उनको ही भगवान 'भक्त' के रूप में स्वीकार करते हैं और उन पर अपना अनुग्रह दिखाते हैं। जिसे 'मुक्ति के लिए भक्ति' कहते हैं। यही सच्ची भक्ति है।

इस तरह के भक्तों को हमने पुराणों में बहुत देखा है। प्रह्लाद, ध्रुव, मार्कण्डेय, तुकाराम, अन्नामैया, त्यागराज, रामदास ये सब लोग महान भक्तों के अंदर आते हैं। इन्होंने इच्छा के लिए अपनी भक्ति का प्रदर्शन नहीं किया, क्योंकि उन्होंने अपने भगवान को नहीं बदला। अपने लक्ष्य को पाने के लिए इन्होंने हर मुश्किल का सामना करके, भगवान से किसी चीज की आशा किए बिना, भगवान पर विश्वास रखकर अपनी सच्ची भक्ति को प्रदर्शित किया।

भगवान से किसी चीज की आशा किए बिना, उस भगवान का सच्चा रूप होने वाली आत्मा पर ध्यान रखने वाले ही असली भक्त हैं। इस तरह सच्चा भक्त होने का सिर्फ एक मार्ग 'ध्यान' है। ध्यान करने का अर्थ मन को शून्य बनाकर भगवान रूपी आत्मा पर दृष्टि रखना है। इसको ही सच्ची भक्ति कहते हैं। 'मुक्ति के लिए भक्ति' भी कहते हैं। बाकी के लोग सब इच्छा के भक्त हैं लेकिन भगवान के भक्त नहीं है।

इसलिए सच्चा भक्त बनना चाहिए। मुक्ति पानी चाहिए। ध्यान करना चाहिए। समझना चाहिए कि 'सिर्फ आशा के बिना किए जाने वाली भक्ति से ही मुक्ति मुमकिन है।'

सच्चे भक्त

हम लोग बहुत सारी इच्छाओं के साथ भगवान पर ध्यान रखते हैं। यानि इच्छा के लिए हम भगवान पर ध्यान रख रहे हैं। वास्तव में हमारा ध्यान हमारी इच्छा पर है, भगवान पर नहीं है।

भक्ति का अर्थ भगवान पर दृष्टि रखना है। लेकिन इच्छा पर ध्यान देना भक्ति कैसे होगी? इसलिए इच्छा होना भक्ति नहीं है, इच्छा के बिना वाली भक्ति ही सच्ची भक्ति है। श्री कृष्ण भगवान ने भगवद्गीता में इसी बात को बताया है। हर काम को प्रतिफल की आशा किए बिना करने के लिए कहा है। 'निष्काम कर्म' करने के लिए कहा है।

जब कोई हमारे घर आकर कुछ मांगता है तो उसे हम याचक कहते हैं। लेकिन हम उसे इच्छा मांगने वाला या विनती करने वाला नहीं कहते हैं। इतना ही नहीं हम उनको बहुत कम नजर से देखते हैं।

ठीक इसी रूप से हम सब समझ रहे हैं कि हम सिर्फ भगवान से इच्छा मांग रहे हैं। लेकिन सच तो यह है कि मांगने वाले सभी लोग याचक हैं। हम समझते हैं कि भगवान से मांगने में गलती क्या है? जो लोग हमसे मांगते हैं उन्हें हम जिस तरह नीची नजर से देखते हैं, ठीक उसी नजर से ऊपर वाला भी हमें देखता है। यानि हमसे भीख मांगने वाले हमारी दृष्टि में जैसे होते हैं, उसी तरह से भगवान से मांगने वाले भी होते हैं।

धन-संपत्ति, बुद्धि, शक्ति सब कुछ देने के बाद भी अगर हम भगवान से मांगते रहेंगे तो भगवान हमारे बारे में क्या समझेंगे? इस विषय के बारे में हम नहीं सोच रहे हैं क्योंकि हमें मेहनत करना पसंद नहीं है। मेहनत किए बिना हम सब कुछ पाना चाहते हैं।

इतना ही नहीं, जो कुछ भी भगवान ने हमें दिया है उसका सही तरह से इस्तेमाल किए बिना, तृप्त हुए बिना, जो नहीं करना चाहिए वह करते हुए, क्या मांगना चाहिए यह न जानते हुए, किस तरह से व्यवहार करना है न जानते हुए, जिस मार्ग में चलना चाहिए उस मार्ग में नहीं चलते हुए, जो कुछ भी हमें दिया गया है उसका दुरुपयोग करते हुए, जीवन को दुखी बनाकर, क्या करना है समझ ना आकर याचक बन रहे हैं। इस तरह प्रस्तुत दुनिया की परिस्थिति है।

इस बीच में दुनिया वाले समझ रहे हैं कि लोगों में भक्ति अधिक हो चुकी है, लेकिन ऐसा नहीं है। भक्ति भी अधिक नहीं हुई है और भक्त भी अधिक नहीं हुए हैं। कुछ अधिक हुआ है तो वह सिर्फ याचक हैं। गौर करने पर हमें पता लगेगा कि भगवान से किसी चीज की आशा नहीं रखते हुए भगवान की आराधना करने वाले लोग बहुत कम हैं।

याचना करने को हम भक्ति समझ रहे हैं। लेकिन याचना अलग है और भक्ति अलग है। जब भगवान की आराधना से इच्छा को निकाल देंगे तभी वो भक्ति होती है। अगर उसमे इच्छा है तो वो याचना होती है लेकिन भक्ति नहीं होती। इस काम को हम पवित्र मानते हुए, अपने आप को महान समझ रहे हैं। सर्व शक्तिशाली और सब कुछ हासिल करने वाले होने के बाद भी हम इस बात पर गौर नहीं फरमा रहे हैं।

जिसके पास खाने को खाना या कुछ भी नहीं है, अगर वह भगवान से मांगेगा तो समझ आता है, लेकिन सब कुछ होने के बाद भी मांगना बहुत विचित्र बात है। जिन लोगों के पास कुछ भी नहीं है वो खाने के लिए मांगते हैं, लेकिन जिनके पास सब कुछ है वो लालच से मांगते हैं।

इस बात के बारे में थोड़ा सोचना चाहिए। जब हम किसी मंदिर में जाते हैं तो भीख मांगने वालों को थोड़े पैसे देते हैं। इस तरह पैसे देकर हम अपने

आप को महान समझते हैं। भक्त भी समझते हैं कि हम मंदिर में कुछ महान काम करने के लिए आए हैं लेकिन वो नहीं जानते कि भिकारी जो बाहर कर रहे हैं उसी काम को वह अंदर जाकर कर रहे हैं। हमारी साड़ी, सूट-बूट और अलंकार देखकर भिखारी हमें महान समझते हैं।

याचना करना कोई विशेष काम नहीं है। कोई महान काम भी नहीं है। सब कुछ होने पर भी लालची बनकर करने वाले काम को भक्ति का पवित्र नाम देकर, हम अपने आप को महान भक्त समझ रहे हैं। 'जो लोग अपने पास सब कुछ होने के बाद भी संतृप्त नहीं होते उनके लिए याचक बनना ही सही है।'

हम हमेशा 'भगवान से' कुछ मांग रहे हैं लेकिन 'भगवान को' नहीं मांग रहे हैं। जो लोग भगवान को चाहते हैं सिर्फ उन्हें ही भगवान मिलते हैं। जो लोग भगवान से मांगते हैं और बाद में उनकी तस्वीर बदल देते हैं क्या भगवान ऐसे लोगों को मिलेंगे?

भगवान के 'सच्चे भक्त' बनने के लिए, भगवान से मांगना नहीं चाहिए उनकी आराधना करनी चाहिए। इच्छा के बिना आराधना करने के लिए सबसे पहले इच्छा का कारण होने वाले मन पर जीत हासिल करनी चाहिए। मन पर जीत हासिल करने के लिए 'श्वास पर ध्यान' रखना चाहिए। ध्यान करने से हमारी इच्छा पर जीत हासिल करके हम भगवान के सच्चे भक्त हो सकते हैं। इसके लिए हम मंदिर का इस्तेमाल कर सकते हैं और उनको सच्चे भक्ति केंद्र बना सकते हैं। चलो हम सब भी 'सच्चे भक्त' बनें!

सच्चा भक्त कौन है?

हम अपने आप को भक्त समझते हैं। लेकिन ऐसा बोलने से पहले हमें एक बार सोच लेना चाहिए कि क्या हमें सच में भगवान पसंद हैं? क्या हमारा व्यवहार भगवान को पसंद करने जैसा है या नहीं है? अगर सच में हमारा व्यवहार भगवान को पसंद करने जैसा है तो हमें भगवान पसंद हैं और हम उनके सच्चे भक्त हैं। लेकिन हमारा व्यवहार इसके भिन्न है तो सोचना चाहिए कि क्या भगवान को हम पसंद कर रहे हैं? जो भगवान हमें पसंद नहीं हैं हम उनके भक्त कैसे हो सकते हैं? सिर्फ अपने आप को भगवान का भक्त समझना काफी नहीं है। इस तरह से समझने से कोई भी फायदा नहीं होने वाला है।

स्वार्थ से जुड़ी हुई पसंद भगवान की सच्ची पसंद नहीं है। 'निस्वार्थ और निष्काम पसंद ही सच्ची पसंद' है। वही सच्ची भक्ति है। पसंद करने का मतलब उपहार समर्पण करना नहीं है। हमारे व्यवहार को समर्पण करना है। भगवान के बारे में अवगाहन करके, हर काम में, हर वक्त, हर बात में, हमारे व्यवहार में भगवान की पसंद को व्यक्त करना चाहिए। तभी भगवान से सच्चा प्यार और भक्ति होने जैसा है।

सिर्फ कर्मों के बिना बातों से काम नहीं चलता है। बातों से ज्यादा काम जरूरी है। हम बातों को जरूरी समझते हैं लेकिन भगवान कर्मों पर ध्यान देते हैं और उन्हें जरूरी समझता हैं। इतना ही नहीं, भगवान उपहारों को जरूरी नहीं समझते हैं क्योंकि धरती पर जो कुछ भी है वो सब भगवान का है। इतनी सारी चीजों के सामने हमारे द्वारा दिए गए उपहार क्या चीज हैं?

हमें पहले जानना है कि हमारे कर्म और व्यवहार जरूरी हैं इसलिए भगवान के प्रति हमारे कर्म कैसे होने चाहिए? हमें कैसा व्यवहार करना चाहिए? सबसे पहले जानना चाहिए कि भगवान कौन हैं? उनके बारे में अवगाहन करनी

चाहिए।

सकल चराचर सृष्टि की सृष्टि करने वाला भगवान है। सृष्टि आदि से, कल्प आदि से जो शक्ति निरंतर और अविनाश रूप से प्रकाशित हो रही है उस अतीत शक्ति को ही भगवान कहते हैं। वही सृष्टिकर्ता है। उसके बारे में वर्णन करना असाध्य है।

भगवान सर्वव्यापी और सर्व अंतर्यामी हैं। जिसका मतलब सब कुछ वही हैं। यानि समस्त मानव ही नहीं, धरती पर जो कुछ है सब उसी का रूप है। इस बात को समझकर भगवान की सृष्टि को प्यार करना चाहिए और उसकी इज्जत करनी चाहिए।

भगवान ही सब कुछ है। जो हमारे साथ के इंसान है उन्हें धर्म या जाति के भेद से कम नजर से नहीं देखना चाहिए। दूसरे धर्म होने की वजह से उनसे नफरत नहीं करनी चाहिए। किसी दूसरे देश वाले होने की वजह से उनसे युद्ध नहीं करना चाहिए। हमारे स्वार्थ के लिए भगवान स्वरूप होने वाले दूसरे इंसानों को धोखा नहीं देना चाहिए। उनकी बेइज्जती नहीं करनी चाहिए। उन्हें तकलीफ नहीं देनी चाहिए। उन्हें तुच्छ नहीं समझना चाहिए। उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए। हम किसी को कुछ करेंगे तो वो भगवान को करने के समान होगा। किसी दूसरे को तकलीफ पहुँचाना भगवान को तकलीफ पहुँचाने के समान है। जिन भगवान से हम प्यार करते हैं उन्हें तकलीफ नहीं पहुँचाना चाहिए।

इतना ही नहीं, भगवान स्वरूप होने वाले मासूम जीवों की हिंसा नहीं करनी चाहिए। उनके मांस का भक्षण नहीं करना चाहिए क्योंकि किसी भी जीव की हिंसा करना भगवान की हिंसा करने के बराबर है। जब आपको भगवान पसंद हैं तो आप उनकी हिंसा कैसे कर सकते हैं? क्या कोई प्यार करने वाले की हिंसा करता है? उनकी हिंसा करते हुए क्या हम उनसे प्यार कर सकते हैं?

बातों में तो हम कह रहे हैं कि हमें भगवान पसंद हैं लेकिन कर्मों में हम हिंसा कर रहे हैं। भगवान के रूप के प्रति क्रूर रूप से व्यवहार करने वाला भक्त कैसे हो सकता है? अगर सच में पसंद हैं तो क्या कोई भगवान के प्रति इस तरह व्यवहार करेगा? भगवान के प्रति इस तरह व्यवहार करने वाला भगवान को कैसे पसंद हो सकता है? वह इंसान भगवान का 'भक्त' नहीं हो सकता है और उस इंसान की 'भक्ति' भी नहीं हो सकती है।

गीता में श्री कृष्ण परमात्मा के द्वारा 'अद्वेष्टा सर्वभूतानाम' मतलब 'किसी भी प्राणी से द्वेष नहीं करने वाला मेरा भक्त है और मेरे लिए वह अत्यंत प्रिय है' कहा गया है।

जो कोई भी जीव हिंसा नहीं करेगा, समस्त मानवों को समान प्यार करेगा, जानेगा कि उसकी तकलीफ के समान ही दूसरों की तकलीफ भी है, अपने साथ-साथ दूसरे जीवों की भी खुशी चाहेगा वही भगवान का सच्चा भक्त होगा।

सृष्टि के समस्त जीव भगवान के रूप हैं। इस बात को जानने के लिए और भगवान का सच्चा भक्त बनने के लिए सिर्फ एक मार्ग है। वह 'आनापानसती ध्यान' है। ध्यान के द्वारा सभी सत्य को हम जान सकते हैं।

सभी देवता हमारा मार्गदर्शन करने आते हैं

ईश्वर शक्ति, दया और अनुकंपा के अवतार हैं। एक ही राय पीढ़ियों से चली आ रही है। हर कोई भगवान को प्रसन्न करना चाहता है और पूजा, प्रार्थना, नमाज और भजन के माध्यम से अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहता है। वही कर भी रहा हैं। उन्हें इस बात का भरोसा है। इससे आगे नहीं सोचते।

लेकिन हम जिन देवताओं की पूजा करते हैं वे सभी हमारे कष्टों को पूरा करने के लिए नहीं आते हैं। हमें यह जानने की जरूरत है कि वे हमें हमारी कठिनाइयों को दूर करने का रास्ता दिखाने आए हैं।

भगवान हर रूप में, हर क्षेत्र में, आवश्यकता के अनुसार आते हैं। बेचैनी और अंतहीन दुःख की स्थिति में हमें उत्थान का मार्ग दिखाने के लिए, और हमें हमारे दुखों से बचने का मार्ग दिखाने के लिए आते हैं।

हमें सही रास्ते पर ले जाने के लिए आते हैं जब हम नहीं जानते कि क्या करना है। इतना ही नहीं, वह खुद दिखाते हैं कि कैसे जीना है। मानव जीवन की महानता की बात करते हुए ऐसे मनुष्य रूप में आकार जीवन से हमें यह शिक्षा देते हैं कि यदि सोच लें तो कुछ भी अप्राप्य नहीं है। वह एक आदर्शवादी के रूप में खड़े होते हैं। वह देहधारण कर लेते हैं जब उन्हें वह कार्य करन होता है जो वह करने वाले हैं। अनादि काल से हमने पूरे विश्व में भगवान को कई रूपों में आते देखा है।

ऐसे जितने भी देवता आए, वे सब अपनी शक्ति से हमें बहुत बड़े-बड़े काम दिखा गए और बहुत कुछ सिखा गए। हम उनकी शक्तियों को देखते हैं लेकिन उनकी शिक्षाओं को नहीं समझते। यदि हम उनकी पूजा करते हैं क्योंकि वे शक्तिशाली हैं, तो हम आशा करते हैं कि कठिनाइयाँ हल हो जाएँगी।

हमें इस बात का अहसास नहीं है कि अगर हम सिखाई गई बातों का

अभ्यास करते हैं तो हम हमेशा के लिए दुख से बाहर निकल सकेंगे। जब तक 'हम उनके चरणों की पूजा करते हैं, कोई उनकी बातों को नहीं पकड़ रहे हैं'। हम भजन के माध्यम से उनकी पूजा करते हैं, लेकिन आदर्श रूप से नहीं लेते। उनकी प्रार्थना करो लेकिन पापों को दूर करने की कोशिश मत करो। हमें लगता है कि हमारी ऊर्जा कमजोर और महत्वहीन है, लेकिन हम नहीं जानते कि हम जो चाहते हैं उसे प्राप्त कर सकते हैं यदि हम अपनी ऊर्जा के साथ अभ्यास करें।

ध्यान दें कि देवता युगों-युगों से आते-जाते रहे हैं और हमारी स्थिति में सुधार नहीं हो रहा है। हमारा दुख पूरी तरह से ठीक नहीं हुआ है। श्री रामचंद्र के आगमन और प्रस्थान के बाद त्रेतायुग का अंत हुआ और द्वापर युग आया। साथ ही भगवान कृष्ण के आने और जाने के बाद द्वापर युग का अंत हो गया और कलियुग आया। देवता आए और चले गए तब भी हमारा जीवन स्वार्थी और दुखी रहा। कलियुग के प्रवेश के बाद भगवान बुद्ध, ईसा मसीह, मुहम्मद, गुरु नानक, महावीर, रामकृष्ण परमहंस, रमण महर्षि, सत्य साईं बाबा और कई और आए, लेकिन दुख बढ़ता रहा और हम दुख से छुटकारा नहीं पा सके।

इसका मुख्य कारण यह है कि वे सभी देवता एक बात सिखाते हैं और हम जो करते हैं वह दूसरा है। वे जो कहते हैं उसका अभ्यास किए बिना हम उनकी पूजा करने के आदी होते हैं। इसलिए हम दुःख से पूर्ण राहत के बिना शांति से नहीं रह सकते हैं। दुनिया में किसी भी भगवान ने गरीबों के दुखों को दूर नहीं किया है, दुःख सहने का उपाय, दुःख से सदा के लिए बाहर निकलने का रास्ता ही सिखाया है।

हर किसी की तरह, ब्रह्मर्षि पत्री जी वर्तमान में हमारी बीमारियों और दुखों को रोकने के तरीके के रूप में ध्यान सिखा रहे हैं। इस ध्यान अभ्यास से हम न केवल अस्थायी रूप से, बल्कि स्थायी रूप से दुःख से बच सकते हैं।

आपको बढ़ने के लिए नीचे की रेखा को छोड़ना होगा

यद्यपि सभी मनुष्य समान हैं, प्रत्येक व्यक्ति एक समान पैदा होता है। कुछ आत्मा 50 जन्म लेती हैं, जबकि कुछ आत्माएं 100 जन्म लेती हैं। ऐसे भी होती हैं जिनके अधिक जन्म होते हैं। इस प्रकार, प्राथमिक जन्मों में आत्मा के स्तर को शैशवावस्था कहा जाता है। ऐसे लोग कहते हैं कि कोई भगवान नहीं है, दिखाओ कि कहाँ है? बहस करते हैं। पूजा नहीं करते। ऐसे लोगों को नवजात शिशु की स्टेज कहा जा सकता है। जिन लोगों ने अभी तक पठन-पाठन की दृष्टि से शिक्षा प्रारंभ नहीं की है। यह 'मूलाधार चक्र' है। इस अवस्था में उनका व्यवहार ऐसा रहता है। यह उनकी गलती नहीं है। वही इनका जन्म स्थान है।

कुछ जन्म लेने के बाद उनका आत्मसम्मान बढ़ता है। उन जन्मों में कुछ सीख मिलती है। जीवन में अनेक सुखों का अनुभव करके सब देखते हैं। सर्वाधिकार सुरक्षित महसूस करते हैं। अनुभव अर्जित करते हैं। थोड़ा आगे बढ़ते हैं। मानते हैं कि यह सृष्टि कोई ताकत चला रही है। सोचते हैं कि वह शक्ति ही ईश्वर है। इसलिए कहते हैं कि भगवान इस अवस्था में हैं। लेकिन वे वह भगवान है जिस पर वह विश्वास करता है, और कोई और देवताओं को निराकार नहीं कहता है।

यहाँ उनकी आत्मा के स्तर को 'बालात्मा' कहा जाता है। वे पूजा, भजन और प्रार्थना करते हैं क्योंकि उनका मानना है कि भगवान मौजूद हैं। ऐसे लोगों को बढ़ते बच्चे की परिणति कहा जा सकता है। उन्हें उन लोगों के रूप में माना जा सकता है जिन्होंने शिक्षा के मामले में प्राथमिक शिक्षा में प्रवेश किया है। यह 'स्वाधिष्ठान चक्र' है।

कुछ और जन्म लेने के बाद, और अधिक अनुभव प्राप्त करने के बाद, ये सभी जीव एक ही शक्ति से प्रेरित होते हैं, यह महसूस करते हैं कि केवल एक

भगवान है। इसलिए सभी देवताओं को एक कहा जाता है।

इस स्तर को 'युवावस्था' कहा जाता है। इस अवस्था में वे भगवान की स्तुति करते हैं। शिक्षा में हाई स्कूल शिक्षा में माना जा सकता है। यह 'मणिपुरक चक्र स्तर' है।

फिर भी इतने अधिक जन्म लेने के बाद भी ईश्वर मेरे भीतर कहीं नहीं हैं, यह किताबों, धर्मशास्त्रियों और वयस्कों के माध्यम से ही मिल सकते हैं, यह महसूस करता है। उनके स्वयं के स्तर को 'परिपक्वता' कहा जाता है। इस अवस्था में नाम का जाप किया जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में उन्हें जूनियर कॉलेज स्तर पर माना जा सकता है। यह है 'अनाहत चक्र स्तर'।

कुछ और जन्म लेने के बाद व्यक्ति उस ईश्वर यानि आत्मा को जानने की कोशिश करता है। उनके आत्मा स्तर को 'वृद्धावस्था' कहा जाता है। इस अवस्था में ध्यान शुरू होता है। शिक्षा के क्षेत्र में कॉलेज स्तर पर सोचा जा सकता है। यह 'विशुद्ध चक्र' है।

फिर कुछ जन्मों के बाद 'भगवान मुझ में थे' समझता है। उस अवस्था से व्यक्ति स्वयं भगवान को 'अहं ब्रह्मास्मि' के रूप में अनुभव करता है। उनकी आत्मा के स्तर को 'मुक्त आत्मा' कहा जाता है।

एक लड़के की अवस्था जो सब कुछ करने में सक्षम है, उसे शिक्षा के क्षेत्र में एक वयस्क से लेकर स्नातकोत्तर तक माना जा सकता है। यह 'आज्ञा चक्र' है।

ऐसा करने से अंतिम जन्म होता है। धर्मशास्त्री बनें। सभी प्राणियों की रचना के प्रति पूर्ण जागरूक रहें। 'पूर्णात्मा' के स्तर तक पहुँचें। दिव्य दृष्टि अर्जित करें। सब कुछ अपने आप में है। शिक्षा में पीएचडी अर्जित करने के रूप में माना जा सकता है। जो सहस्त्राब्दी की अवस्था में पहुँच चुके हैं। यह एक ऐसे युवा की अवस्था हो सकती है जो हर तरह के काम को पूरी कुशलता से करने में सक्षम हो।

जो लोग प्रशंसा सोचते है वह भगवान नहीं करते है

हम जो कुछ भी करते हैं, हम वही करते हैं जो दूसरे सोचते हैं। लेकिन सोचो कि भगवान क्या सोचते हैं? हम वो काम करते हैं जिसकी दुनिया सराहना करती है। लेकिन ऐसे काम करो जो परमेश्वर को भाए।

भगवान हमें तभी याद आते हैं जब मुश्किलें आती हैं, जब समस्याएं होती हैं, या जब हम भगवान की तस्वीर या मूर्ति देखते हैं। अन्य समय में ईश्वर का चिंतन नहीं करते। इतने कम समय में भी अपनी समस्याओं, कष्टों, इच्छाओं को कहते हैं, लेकिन ईश्वर के बारे में सोचने के लिए पर्याप्त समय नहीं निकालते।

हम उनसे सब कुछ चाहते हैं, लेकिन भगवान हमसे क्या उम्मीद करते हैं? भगवान हमें कैसे चाहते हैं? वो सोचो। हम कब तक उम्मीद करेंगे कि भगवान हमें खुश करेंगे? परमेश्वर को खुश करने के लिए हम क्या कर सकते हैं? सोचें कि जब हम व्यवहार करते हैं तो भगवान कितने प्रसन्न होते हैं। इस बारे में सोचें कि हमारे पास कौन से गुण हैं जिनकी परमेश्वर सराहना करते हैं।

हम दुनिया के लिए कर रहे हैं लेकिन भगवान के लिए कुछ नहीं कर रहे हैं। हम अपने शरीर को संसार द्वारा प्रशंसित होने के लिए सुशोभित करते हैं। लेकिन यह उन सद्गुणों को शोभा नहीं देता जिन्हें परमेश्वर स्वीकार करता है। लंबे समय से हम शरीर की सफाई और बाहरी सफाई को महत्व देते रहे हैं लेकिन आंतरिक सफाई और भावनात्मक सफाई को नहीं।

दुनिया संपत्ति, मंजिल, पद, नौकरी, स्थिति, नाम, प्रसिद्धि देखती है। इसलिए हम इन्हें महत्व देते हैं। हम उनके पीछे दौड़ते हैं। हम अपना समय और जीवन उनके लिए बिताते हैं। हम उन्हें कमाकर दुनिया की प्रशंसा अर्जित करने की कोशिश करते हैं। लेकिन अच्छे व्यवहार, अच्छे शब्द, अच्छे गुण जो भगवान को भाते हैं, हासिल करने की कोशिश नहीं करते।

इसके अलावा, सभी जीवित प्राणियों और भगवान के रूपों के लिए

कोई प्रेम, दया या करुणा नहीं रखते। हम अपनी खुशी के लिए उन्हें बेरहमी से मारते और खाते हैं। यह नहीं सोचती कि वह भी भगवान के अवतार हैं। हम पारिवारिक गौरव और जातिवाद दिखाते हैं। घृणा के साथ व्यवहार करते हैं। हम क्षेत्र और देशभक्ति से नफरत करते हैं। भगवान की स्तुति के लिए हमें उस समानता का अभ्यास करना चाहिए जिसकी वह प्रशंसा करते हैं क्योंकि 'समानता ही देवत्व है।'

हम दुनिया को महान दिखाने के लिए पूजा, भजन, प्रार्थना, नमाज करते हैं, उपहार देते हैं, लेकिन ईश्वर को प्रसन्न करने वाले अहिंसा के गुण का अभ्यास नहीं करते। हम जीवों पर अत्याचार करते हैं और दुनिया की प्रशंसा के लिए भोजन करते हैं, लेकिन यह मत सोचो कि हम भगवान के रूप में प्राणियों पर अत्याचार करके भगवान के क्रोध को झेल लेंगे।

इसलिए यह जान लेना चाहिए कि संसार जिसकी प्रशंसा करता है वह ईश्वर की प्रशंसा नहीं है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा जीवन धन्य हो तो 'ईश्वर की स्तुति करनी चाहिए, संसार की नहीं' । इसलिए हमें वही करना चाहिए जो परमेश्वर को भाता है। तभी हमें ईश्वर की कृपा प्राप्त होगी। इसलिए हमें यह याद रखना चाहिए कि जो चीज ईश्वर को प्रसन्न करती है वह केवल हमारे गुण, हमारा अच्छा आचरण है।

अच्छे गुण कैसे आते हैं? अच्छे गुण प्राप्त करने के लिए आपको क्या करने की आवश्यकता है? मूल गुण किससे संबंधित हैं? गुणों का संबंध मन से है। 'अगर हमारा मन अच्छा है तो हम अच्छे काम करेंगे। अगर हमारा मन 'बुरा' है तो हम बुरे काम करेंगे।

यदि आप एक अच्छा मन बनाना चाहते हैं तो आपको 'आनापानसती ध्यान' करना होगा। सात्विक शाकाहार लेना होगा। इन दोनों के अभ्यास से मन शुद्ध होगा। अगर हमारा मन अच्छा है तो हम ऐसे काम करेंगे जो भगवान को भाते हैं। हमें ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है। तो आइए ध्यान करें। चलो शाकाहार की ओर चलें!

पूजा से गुण प्रधान हैं

दुनिया में अधिक प्रतिशत लोग पूजा और प्रार्थना को महत्व देते हैं। लेकिन इनसे ज्यादा महत्वपूर्ण कुछ और है, वह है पुण्य। गुणवत्ता को महत्व क्यों दें? आइए जानने के लिए इस छोटे से उदाहरण को देखते हैं.. एक व्यक्ति हर दिन लगन से भगवान की पूजा करता है। भगवान को प्रसन्न करने वाली चीजें नहीं करता है। यानि वह झूठ बोलता है, सबको सताता है, मांस खाता है और स्वार्थ से सबको धोखा देता है। वह ऐसे काम करता है जो परमेश्वर को अप्रसन्न करते हैं। दूसरा व्यक्ति भगवान की पूजा नहीं करता है परंतु वह सभी से प्रेम करता है, सत्य बोलता है, धार्मिकता का अभ्यास करता है और किसी को सताता नहीं है।

दोनों में से भगवान किसे आशीर्वाद देंगे? दूसरा व्यक्ति, अगर आप थोड़ा सोचते हैं! वही है जो ईश्वर को प्रसन्न करने वाले अच्छे कर्म करता है! कहने का तात्पर्य यह है कि ईश्वर पूजा के बजाय गुणों को महत्व देते हैं। लेकिन हम पूजा को महत्व देते हैं। प्रसन्न करने वाले गुणों को भगवान महत्व नहीं देते।

हमें लगता है कि भगवान की पूजा करने से हमें अच्छे (+) अंक मिल रहे हैं। लेकिन क्या हमें पूजा करने के लिए अच्छे (+) अंक मिलते हैं! मुझे नहीं पता, लेकिन सभी (-) अंक बुरे कर्म करने के लिए आएंगे।

साथ ही यदि हम ईश्वर की पूजा न भी करें तो भी हमें (-) अंक नहीं मिलेंगे, और ईश्वर को प्रसन्न करने वाले कार्य करने से (+) अंक अवश्य प्राप्त होंगे।

हम कितनी भी पूजा, प्रार्थना, भजन करें, कष्ट समाप्त नहीं होते। हम समस्याओं और बीमारियों से पीड़ित होते हैं। जब हम पूजा करते हैं और समस्या हल हो जाती है तब सब कुछ सामान्य होकर, हम जैसा व्यवहार करते थे वैसा ही व्यवहार अब भी करते हैं। ईर्ष्या, घृणा और सभी से श्रेष्ठ होने की चाहत के स्वार्थ के साथ, हर चीज़ हमेशा के लिए अपनी बनने के लिए स्वार्थ

और लालच से निपटते हैं। क्या हम ऐसे काम करके भगवान की पूजा कर रहे हैं?

अगर पूजा और नमाज करते हैं तो भगवान सब कुछ माफ कर देंगे, ऐसा सोचते हैं। हम पूजा को महत्व देते हैं। लेकिन, हम नहीं जानते कि भगवान किस बारे में परवाह करते हैं।

आइए एक और उदाहरण देखें। एक व्यक्ति पूजा कर रहा है। इसी बीच कोई प्यासा व्यक्ति आया। उसने पानी मांगा। तब उस व्यक्ति ने कहा है कि मैं पूजा कर रहा हूँ। अगर हम यह सोचेंगे कि ऐसा करने पर भगवान हमारी सराहना करेंगे तो ऐसा नहीं है। अगर हम उस जीव को ताजा पानी दे दें जो भगवान के रूप में है, यानि आत्मा के रूप में है, तो भगवान ज्यादा प्रसन्न होंगे। हम ऐसा नहीं सोचते। हम संतुष्ट होते हैं कि मैं पूजा कर रहा हूँ।

पड़ोसियों से प्यार करना चाहिए क्योंकि सब भगवान के रूप हैं। लेकिन हम केवल अपनी पत्नी और बच्चों से प्यार करते हैं। अगर हमारा बच्चा परेशान है तो उसे गोद में उठाते हैं और किसी और के बच्चे को बगल में रोने देते हैं। यह ईश्वर की दृष्टि में प्रेम नहीं है। अगर हमारे घर में किसी की मृत्यु हो जाती है तो हम महीनों तक शोक मनाते हैं परंतु यह जानकर दुख नहीं होता कि एक ट्रेन दुर्घटना में सैकड़ों लोग मारे गए।

पड़ोसियों की सेवा के बारे में घंटों व्याख्यान देने के बाद, रास्ते में एक पत्थर को देखकर अनदेखा कर देते हैं। किसी दूसरे व्यक्ति के उस पत्थर को बाहर निकालने का इंतज़ार करते हैं। यह कहना सुरक्षित है कि जिसने पत्थर हटाया, वह उससे अधिक धन्य है, जिसने केवल सेवा का उपदेश दिया।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि ईश्वर पूजा, प्रार्थना, भजन और नमाज के ऊपर गुणों को प्राथमिकता देते हैं। भगवान को प्रसन्न करने वाले गुणों के लिए ध्यान करना चाहिए। ध्यान मन को शुद्ध करता है। अगर हम अच्छे कर्म अच्छे गुणों के साथ करते हैं तो हमें ईश्वर की कृपा प्राप्त होती है।

रूप नहीं, गुण को ठीक करना है

बाहर जाते समय यानि किसी फिल्म, फंक्शन या पार्टी में जाते समय कोई न कोई आईने में देखता है और खुद को सही कर लेता है। दूसरों के लिए सुंदर दिखते हैं, लेकिन अब इस विचारधारा को सुधारना पड़ेगा। गुणों को उसी तरह समायोजित किया जाना चाहिए जैसे हम हर दिन अपने रूप को समायोजित करते हैं।

दूसरों के द्वारा रूप की सराहना की जाती है। लेकिन विशेषता की सराहना भगवान करते हैं। दूसरों की प्रशंसा करने से कोई लाभ नहीं है। लेकिन जीवन धन्य है यदि उसमें ऐसे गुण हैं जो ईश्वर को प्रसन्न करते हैं। इसलिए किसी भी कार्य को 'वैसे करना चाहिए जैसे ईश्वर चाहते हैं न कि दूसरे लोग।'

वास्तविक जीवन में हम धारणा या रूप को महत्व देते हैं लेकिन गुणों को नहीं। रूप को देखने के लिए एक दर्पण होता है। लेकिन गुणों को देखने के लिए कोई दर्पण नहीं होता। तो हम उनकी देखभाल कैसे करें? हम उन्हें कैसे ठीक करें? ऐसा प्रतीत होगा। लेकिन ऐसे कारक भी हैं जो हमारे गुणों को दर्शाते हैं।

वे हमारे घर को सजाने वाले ऋषियों, योगियों और देवताओं की तस्वीरें हैं, क्योंकि जैसे ही हम उनकी तस्वीरें देखते हैं, हमें उनके जीवन में उनके द्वारा अनुसरण किए जाने वाले तरीकों, उनकी शिक्षाओं, उनके शब्दों, उनके कार्यों, उनके गुणों को याद करने की आवश्यकता होती है। हम अपनी विशेषताओं को उनके अनुसार समायोजित करते हैं। इस तरह वे हमारी मदद करते हैं।

जब भी हम उनकी तस्वीर देखते हैं तो हमें अपने व्यवहार की खामियों से अवगत होते हैं। उन्हें ठीक करने की जरूरत लगती है। बदलाव की आवश्यकता लगती है। यही कारण है कि हम उनकी तस्वीरें अपने घर में, अपने लिविंग रूम में रखते हैं। इस प्रकार हम उनकी शिक्षाओं से बहुत कुछ सीख सकते हैं जैसे सत्य बोलना, आध्यात्मिकता का अभ्यास करना, सभी जीवित प्राणियों के प्रति प्रेम और करुणा दिखाना।

हम उनसे कई आदर्श सीख सकते हैं जैसे विनम्रता से जीना और सबके प्रति दयालु होना। इसलिए जब हम उनकी तस्वीरें देखते हैं तो वे तस्वीरें आईने का काम करती हैं।

इसके आधार पर हम जान सकते हैं कि अगर कोई हमें डांटने पर प्रतिक्रिया नहीं देता है या उसके बारे में नहीं सोचता है तो वह हमें डांटने वालों का है। इसलिए जब हम देवताओं की तस्वीरें देखते हैं तो हमें यह जानने की जरूरत है कि उनके जीवन में चीजें एक संदेश और एक दर्पण के रूप में काम कर सकती हैं जो हमारे जीवन में हमारे गुणों को सुधारती हैं।

साथ ही जब आप शिरडी साईंबाबा, योगी वेमना, रामकृष्ण परमहंस, रमण महर्षि, वीरब्रह्मेंद्रस्वामी, राघवेंद्रस्वामी, कबीर जैसे योगियों की तस्वीरें देखते हैं, तो यह स्पष्ट है कि उन्होंने शारीरिक आराम, सुख, नाम और प्रसिद्धि को महत्व नहीं दिया।

लेकिन हम सभी विलासिता, धन, भौतिक सुख, प्रसिद्धि, पद को महत्व देते हैं। वे जिस चीज को महत्व देते हैं उसे हम वास्तविक महत्व नहीं देते। यह सब हमें तब महसूस करना चाहिए जब हम उनकी तस्वीरें देखते हैं।

हम उनकी पूजा करते हैं कि ऐसा कुछ भी नहीं है जो वे नहीं कर सकते। लेकिन उन्होंने जो अभ्यास किया, जो उन्होंने सिखाया, हमें उसकी परवाह नहीं है। हम उनकी पूजा करते हैं और उनसे सभी भौतिक सुख की भीख माँगते हैं जिन्हें उन्होंने पूरी तरह से छोड़ दिया था। अगर हम इस बात के बारे में अच्छी तरह सोचते हैं तो हम कितने मूर्ख प्रतीत होते हैं समझ में आता है।

इसलिए हमें 'ईश्वर को प्रसन्न करने वाले गुणों को ठीक करना है, न कि उस रूप को जो संसार को भाता है'। देवताओं को फोटो लगाने का मतलब यह है कि तस्वीरें हमारे गुणों की खामियों को दर्शातें हैं।

हम देवताओं की पूजा कर सकते हैं लेकिन वे अभ्यास करने में असमर्थ होते हैं। वे जो कहते हैं उसका अभ्यास करने के लिए ध्यान करना चाहिए। ऐसा करने से धीरे-धीरे हमारे गुण बदलेंगे और व्यवहार बेहतर होगा। शुभ कर्म करने से शुभ फल प्राप्त होंगे। हम भी भगवान की कृपा प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान की तस्वीरें झुकने या कठिनाइयों और इच्छाओं को व्यक्त करने के लिए नहीं हैं। हमें यह जानने की जरूरत है कि वे प्रतिबिंब हैं जो हमारे गुणों को दर्शाती हैं। ध्यान और भी कई सत्य प्रकट करता है।

अंतर्ज्ञान महत्वपूर्ण है

जब हम मंदिर, चर्च और मस्जिद में जाते हैं तो हम अपने जूते धोते हैं, अच्छे कपड़े पहनते हैं और साफ हो जाते हैं। लेकिन एक बात हमें समझ में नहीं आती.. भगवान जो चाहते हैं वह बाहरी स्वच्छता नहीं है, मन की स्वच्छता है।

वह चाहते हैं कि हमारा व्यवहार शुद्ध हो, हमारे गुण शुद्ध हों, ना कि हम दुकान पर जाकर नारियल चढ़ाएं, चर्च जाएं, मस्जिद जाएं और प्रार्थना करें। साईं बाबा के मंदिर जाने और भजन करने का कोई मतलब नहीं है।

हम शरीर को साफ रखते हैं भले ही भगवान ऐसा न कहें। लेकिन हम अपने वचन और विचार को साफ नहीं रख सकते।

भगवान कृष्ण जैसा कैसे होना चाहिए? क्या करें? कैसे व्यव्हार करें? जीवन क्या है? यह भगवद्गीता में श्रीकृष्ण द्वारा अच्छी तरह से सिखाया गया है। साथ ही यीशु ने हमें 'बाइबिल' में बहुत सी बातों की आज्ञा दी है। उसी तरह, कुरान हमें बताता है कि कैसे व्यवहार करना है।

लेकिन हमें उनकी परवाह नहीं है। हम उनकी बातों का पालन नहीं करते हैं। हम उनकी पूजा करते हैं, प्रार्थना करते हैं, भिक्षा मांगते हैं। बस इतना ही। लेकिन मन साफ नहीं होता। गुण नहीं बदलते। स्वार्थ, बुराई, कठोरता, लालच, अभिमान नहीं छोड़ते। लेकिन अगर हम इन सबको छोड़ दें तो हम भगवान के करीब पहुंच जाएंगे। इसलिए हमें अपनी बुराई और बुरी भावनाओं को बाहर छोड़ देना चाहिए, न कि केवल चप्पल या गंदे कपड़े।

इससे स्पष्ट है कि जब हम अच्छे शिक्षक या भगवान के पास जाते हैं तो हमें केवल धुले हुए कपड़े नहीं, बल्कि अपने अंदर के बुरे गुणों को छोड़ना पड़ता है। यानि ईश्वर आंतरिक शुद्धि पर जोर देता है, बाहरी शुद्धि पर नहीं। वह उम्मीद करता है कि दुनिया हमसे अच्छे गुणों के साथ लाभान्वित होगी। सच्चा भक्त भले ही बाहरी ऐशो - आराम का प्रदर्षन न करे... अभ्यास अवश्य करे। ऐसा व्यक्ति भगवान का सच्चा भक्त माना जाता है। उनके आदेशों की अवहेलना करने और बाहरी कार्यों से उनकी चापलूसी करने का कोई मतलब नहीं है।

'मन की शुद्धि' का अर्थ है 'विचार की शुद्धि'। ऐसा करने का तरीका है 'सांस पर ध्यान' और 'सात्त्विक शाकाहार' जो मन को शुद्ध करता है।

भगवान भावना को ही देखते हैं

हमें जो कुछ दिया जाता है, उसमें से कुछ का उपयोग करके, अपनी क्षमता के अनुसार हम दूसरों की विभिन्न तरीकों से मदद करते हैं। हम सेवा करते हैं। हम ऐसा करके बहुत संतुष्ट होते हैं। लेकिन सृष्टि के सिद्धांत के अनुसार, यानि ईश्वर का सिद्धांत, हमने जो किया है और कितना किया है, उसके भीतर उस काम को करने की हमारी भावना क्या है? वही महत्वपूर्ण है। हमने किस उद्देश्य से किया? हम ऐसा करने के बारे में कैसा महसूस करते हैं? वही देखा जाता है।

किए गए कार्य का फल मिलेगा। इसलिए हम कितना भी महान कार्य क्यों न करें, हम कितना भी अच्छा कार्य क्यों न करें, हमें इसे अच्छी समझ के साथ करना चाहिए। इसमें कोई स्वार्थ या अपवित्रता नहीं होनी चाहिए। कोई उम्मीद नहीं की जानी चाहिए। उन लोगों से कृतज्ञता की भावना की अपेक्षा नहीं की जानी चाहिए जिन्होंने वह सहायता प्राप्त की। इस संपूर्ण विश्व कल्याण की भावना के साथ हमारा गुण समझना चाहिए। हमें जो दिया गया है उसमें भाग्यशाली महसूस करना चाहिए। तब किया गया कार्य, सेवा हमें परिणाम देगी।

हम पूजा, प्रार्थना, भजन, पाठ, जाप और व्रत करते हैं। यह सब करने का कारण इच्छाएं हैं। यानि हम इसे इस भावना के साथ करते हैं कि इच्छाएं पूरी होंगी। बस इतना ही। लेकिन बिना किसी इच्छा के भगवान की पूजा नहीं करते। भले ही हाथ भगवान की पूजा करते प्रतीत होते हैं, हम परिणाम प्राप्त करने में असमर्थ रहते हैं क्योंकि भावना एकजुट और प्रबल नहीं होती।

कुछ कहते हैं कि हमें कुछ नहीं चाहिए, हमारी कोई इच्छा नहीं है। हम व्यर्थ पूजा करते हैं। यहां भी भावना मायने रखती है। भले ही वे कुछ भी नहीं चाहते, उनकी भलाई की भावना यह है कि पूजा में वे अपने और अपने परिवार

के लिए अच्छा कर सकते हैं। वे नहीं चाहते कि परिणाम वांछित हो। लेकिन यहाँ यह वासनापूर्ण कर्म बन जाता है, इस भावना के कारण कि इच्छा न होने पर कुछ अच्छा होने वाला है। लेकिन 'निष्काम कर्म नहीं है' इसलिए परिणाम नहीं आता है।

अगर कोई हमारी तारीफ करता है, तो परमेश्वर भी मेरी तारीफ करना चाहता है। किसके बारे में सोचें? साथ ही परमेश्वर हमारे लिए क्या चाहते हैं? कई मंदिर बनाते हैं। बड़े-बड़े लोग उन पर अपना नाम लिखते हैं। मेरा मतलब है, अगर उन्होंने जो बनाया है वह सेवा के लिए है, तो नाम क्यों? परिणाम नहीं मिल सकता क्योंकि यहाँ परिणाम से अधिक नाम की उम्मीद होती है।

हम भोजन, कपड़े भी दान करते हैं और चिकित्सा शिविर भी लगाते हैं। हम वित्त पोषण करते हैं। हम आशा करते हैं कि हम अनेक प्रकार की सेवाओं को करने के लिए प्रसिद्ध होंगे। हम खबरों में आना चाहते हैं। इसके अलावा हम उन लोगों से भी आभार की उम्मीद करते हैं जिन्होंने मदद की है।

हम अभिभूत हैं कि हम उनका इतना अच्छा कर रहे हैं। लेकिन वे क्षतिग्रस्त हो गए, पीछे रह गए, कपड़े फटे हुए थे, इस भावना के साथ देने से यह काम नहीं करेगा क्योंकि हम केवल इस बात की परवाह करते हैं कि हम उस भावना के साथ क्या करते हैं।

इसलिए चाहे जो भी कार्य किया जाए, चाहे कितनी भी सेवा की जाए, चाहे कोई भी पुण्य कार्य किया जाए, कार्य कितना भी महान क्यों न हो, यदि भावना सही और शुद्ध नहीं है तो परिणाम शून्य है। इसलिए इसे 'भवसुध ज्ञान सिद्धि' कहा जाता है। इसलिए 'यह जानने की जरूरत है कि भगवान भावना को देखते हैं' क्योंकि वह 'भावना प्रेमी' हैं, बाहरी प्रेमी नहीं हैं। परिणाम भावना पर निर्भर करता है, काम के अनुसार नहीं।

भावना का मतलब मन को शुद्ध करना है। मन को शुद्ध करने का एकमात्र तरीका 'आनापानसती ध्यान' है।

प्रार्थना अर्थात भगवान को नहीं, खुद को बदलना है

प्रार्थना का मतलब भगवान को बदलना नहीं है। स्वयं को बदलना है। हम हर तरह की इच्छाओं के साथ भगवान से प्रार्थना करते हैं। हम आशा करते हैं कि परमेश्वर द्वारा दुखों को दूर किया जा सकता है और परमेश्वर दयालु हैं, हम निश्चिंत हो सकते हैं कि वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देंगे और हमारी आवश्यकताओं और इच्छाओं को पूरा करेंगे। लेकिन वह चुपचाप हमारी प्रार्थना सुनते हैं और धीरे-धीरे हमें हमारी गलतियों से अवगत कराते हैं। वह कोमलता से हमें पश्चाताप करवाते हैं। हमारे द्वारा की गई गलतियों को दोहराए बिना वह हमें बदल देते हैं। वह हमारे गुणों को बदल देते हैं। वह हमें बताते हैं कि जो कुछ होता है वह हमारे लिए सबक सीखने के लिए होता है; हममें बदलाव लाता है। धीरे-धीरे वह हमें अच्छे में बदल देते हैं। वह अंततः हमें देवताओं में बदल देते हैं। तब तक वह हमें देखते रहते हैं।

हम सुरक्षा के लिए भगवान के पास जाते हैं। इसलिए उनकी उपस्थिति में हमें धीरे-धीरे अपनी गलतियों का एहसास होता है। हम कोई और गलती नहीं करने का वादा करते हैं। इसलिए हर बार जब हम भगवान के पास जाते हैं, हम अपनी गलतियों का विश्लेषण करते हैं, उन्हें स्वीकार करते हैं, जो हमने किया है उसके लिए उनसे माफी मांगते हैं, पश्चाताप करते हैं और उनसे वादा करते हैं कि हम अच्छे बनेंगे।

इस तरह हम परमेश्वर से सहायता माँगने और उसके पास जाकर उनकी कृपा माँगने पर धीरे-धीरे अपनी गलतियों का एहसास कर सकते हैं। इसलिए हम अपने आप को बदलते हैं, अपने जीवन को स्वयं सुधारते हैं और दुखों से मुक्ति पाते हैं। हमारी स्थिति के आधार पर इस सच्चाई को समझने में कुछ साल लग सकते हैं। या इसमें कुछ जन्म लग सकते हैं। लेकिन यही हो रहा है। पूजा के माध्यम से, प्रार्थना के माध्यम से, नमाज के माध्यम से हम "भगवान को नहीं बदलते। हम खुद को बदल रहे हैं।" इसके आधार पर चाहे हम पूजा करें, प्रार्थना करें या नमाज करें, हमारे गुण बदलेंगे और हम बदलेंगे और अपने जीवन को बेहतर बनाएंगे। वह भगवान हैं जब तक हम नहीं बदलते। कोई हमें आशीर्वाद देने वाला नहीं है। यदि हम ध्यान करेंगे तो यह हमें समझ में आएगा।

भगवान बीज देते हैं, फल नहीं

'हम जो कुछ भी बोएंगे, वही काटेंगे,' यीशु मसीह ने कहा है। यानि अगर हम चावल बोते हैं तो हम चावल काटेंगे। अगर हम आम के बीज बोते हैं तो हम आम काटेंगे। बस इतना ही। लेकिन आप नीम के बीज बोने पर आम नहीं काट सकते। घास के बीज बोने पर धान नहीं काट सकते।

साथ ही, यदि हम जीवन में कोई कर्म करते हैं तो उस कर्म का फल हमें भोगना ही पड़ता है। हमें अच्छे कर्म करने में आनंद मिलता है। जब हम पाप करते हैं तो हमें दुःख का अनुभव होता है। इसलिए अब हम वही कर्म अनुभव कर रहे हैं जो पहले किया था। साथ ही, भविष्य में वर्तमान में किए गए कर्मों के फल का अनुभव होगा। कठिनाइयों, बीमारियों और कष्टों के बावजूद, हमें यह जानने की जरूरत है कि सब कुछ हमारे द्वारा अतीत में किए गए बुरे कर्मों का परिणाम है।

हम पूजा कर रहे हैं, प्रार्थना कर रहे हैं कि भगवान हमें बिना किसी कठिनाई के एक अच्छा जीवन दें। भगवान हमें जीवन का आनंद लेने का मार्ग दिखाते हैं, लेकिन अनुरोध नहीं करते। हमें उस रास्ते पर चलने और अपने जीवन का आनंद लेने की जरूरत स्वयं है। हमें अपने दुखों और रोगों से छुटकारा पाना है।

कुरान में हम जिन देवताओं की पूजा करते हैं, उन्होंने हमें भगवद्गीता, बाइबिल के माध्यम से बिना गलती किए अपने जीवन को जीने का तरीका सिखाया है। कहने का तात्पर्य यह है कि अच्छे बीज दिए जाते हैं जो अच्छे जीवन फल देते हैं।

सत्य साईं बाबा ने कहा कि जो बीज उन्हें मीठे फल देते हैं, वे हैं दुनिया से प्यार करना, अपने पड़ोसियों की सेवा करना, साथियों के प्रति दया और

करुणा दिखाना। उन्होंने सच बोलने, धार्मिकता का अभ्यास करने और जैविक हिंसा को कायम रखने के बीज दिए। यदि हम इनका अभ्यास करते हैं तो हम जीवन में सुख, आनंद, स्वास्थ्य और शांति की इच्छा के फल प्राप्त कर सकते हैं।

यदि ऐसे बीजों को उपजाऊ मिट्टी में बोया जाता है तो इसका मतलब है कि बदले में कुछ भी उम्मीद किए बिना हमें अच्छे परिणाम मिलेंगे। कम उपजाऊ मिट्टी में बोए गए बीज जीवन में उतने परिणाम नहीं देते लेकिन एक ना एक दिन वे अंकुरित जरूर होते हैं।

कृष्ण, बुद्ध, जीसस, मुहम्मद, गुरु नानक, रामकृष्ण परमहंस, वीरब्रह्मेंद्रस्वामी, योगीवेमना, रमण महर्षि, सभी ने हमें कई अच्छे बीज दिए। हम उनकी उपजाऊ मिट्टी में खेती करते हैं जिसका अर्थ है निस्वार्थ प्रतिफल। बिना जीवन में अभ्यास करे अच्छे परिणाम प्राप्त करना असंभव है।

हम उन बीजों को बो रहे हैं जो हमें पसंद हैं। इसका मतलब है कि हम उनके द्वारा कहे गए अच्छे कामों की बजाय बुरे काम कर रहे हैं। उनके कारण हमें बुरे फल अर्थात दुःख, रोग, कष्ट भोगते हैं।

किसी को यह आशा नहीं करनी चाहिए कि ईश्वर फल देंगे। पूजा-पाठ करने से जीवन व्यर्थ नहीं जाना चाहिए।

ब्रह्मर्षि पत्री जी ने हमें 'ध्यान के लिए दिव्य कल्पवृक्ष बीज' दिया। यदि हमारे पास कल्पवृक्ष है तो हम जो चाहें प्राप्त कर सकते हैं। यानि अगर हम ध्यान करते हैं तो हमें वह सभी लाभ मिल सकते हैं जो हम चाहते हैं, जैसे स्वास्थ्य, सुख, शांति और कल्याण। हम न केवल अपनी अस्थायी समस्याओं से बाहर निकल सकते हैं, बल्कि हम जन्म दोषों से छुटकारा पा सकते हैं और मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं, जो हर कोई चाहता है।

क्या एक प्राकृतिक विशेषता होनी चाहिए?

आत्मौपम्येन सर्वत्र समं पश्यति योऽर्जुन।

सुखं वा यदि वा दुःखं सः योगी परमो मतः।। (भ.गी. 6-32)

अर्थ :- हे अर्जुन! जो सभी राक्षसों के सुख-दुःख को अपने सुख-दुःख के रूप में देखता है वह मुझे सबसे प्रिय है।

इस श्लोक के माध्यम से भगवान कृष्ण का संदेश यह है कि हर इंसान को यह एहसास होना चाहिए कि वह कैसे सहज होना चाहता है और साथ ही हर जीव जो भगवान द्वारा बनाया गया भगवान का एक रूप है। साथ ही, कठिनाई या दुःख होने पर उसे कैसे कष्ट होता है! इस बात का एहसास होना चाहिए कि इस सृष्टि का प्रत्येक प्राणी अपने आप पीड़ति है। जो ऐसा अनुभव करते हैं वे ईश्वर के परम प्रिय बन जाते हैं।

इस प्रकार जीसस ने सूचित किया। 'अपने पड़ोसियों से वैसे ही प्यार करो जैसे आप खुद से करते हो' सत्य साईं बाबा ने भी अपना महत्वपूर्ण संदेश दिया की "यदि हम ईश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं और ईश्वर की कृपा प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें सभी जीवों से अपने समान प्रेम करना चाहिए। यदि हमारे मन में ईश्वर की भक्ति, सम्मान और भय है, तो हमें वही करना चाहिए जो वे कहते हैं। उनकी पूजा करना ही काफी नहीं है। प्रार्थना करना ही काफी नहीं है।"

सबसे कैसे प्यार करना चाहिए? जैसे खुद से प्यार करते हैं। पत्नी, पुत्र, भाई, माता-पिता से प्रेम करने जैसा भी नहीं। देवताओं ने इस प्रेम की इतनी दृढ़ता से शिक्षा क्यों दी? 'भगवान प्रेम है' यह जाना जाता है। इसलिए प्रेम वह पहला गुण है जो जीवन में होना चाहिए। वह प्रेम एक स्वाभाविक गुण होना चाहिए। प्यार के बिना हम इंसान नहीं हैं।

जीवन में अर्जित करने के लिए प्यार होना चाहिए। प्यार हमारे लिए एक खूबसूरत गहना है। प्रेम हमारे पास सबसे शक्तिशाली हथियार है। प्रेम

हमारे जीवन में पूर्णता लाता है। एक महिला अपने पति को आकर्षित करने के लिए अपनी सजावट और मेकअप से आकर्षक कर सकती है लेकिन वो आकर्षण अस्थायी होता है, और पति, जो शारीरिक आकर्षण के करीब होता है, यह समाप्त होने पर दूरी बना लेता है। सुंदरता के बिना, सजावट के बिना जो स्त्री दूसरे के मनचाहे प्रेम को प्रदान करने में समर्थ होती है, उसे पति का प्रेम सदा के लिए प्राप्त हो जाता है। उसी प्रकार पति को भी अपनी पत्नी से प्रेम करना चाहिए। साथ ही परिवार के सदस्यों का प्यार मिल रहा है। रिश्तेदारों से ही नहीं, दोस्तों से भी। इसलिए यह जानना जरूरी है कि 'प्यार' कीमती गहनों और सुंदरता से अधिक मूल्यवान आभूषण है। चाहे तो 'प्यार' से कुछ भी आसानी से हासिल किया जा सकता है। ऐसी बहुत सी बातें हैं जो संघर्ष, विरोध, हिंसा से नहीं सुलझती और 'प्रेम' से सुलझ जाती हैं। इसलिए यह कहना सुरक्षित है कि 'प्यार' से परे कोई हथियार नहीं है। साथ ही, हमारे पास चाहे कितने भी गुण हों, अर्थात सौंदर्य, बल, धन या पद, जीवन प्रेम के गुण के बिना परिपूर्ण नहीं हो सकता।

हमें 'प्रेम' के गुण को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। यह प्राकृतिक रूप से तैयार होना चाहिए। इसे अंतराल से ऊपर उठना चाहिए। इसे बाढ़ की तरह बहना चाहिए। बस इतना ही। लेकिन प्यार में पड़ने की कोशिश करने का कोई फायदा नहीं है। अगर मेकअप ब्यूटी थोड़ी देर के लिए प्यार में रहने की कोशिश करती है तो यह अस्थायी होता है। लेकिन प्राकृतिक रूप से तैयार किया गया 'प्रेम' सभी स्थितियों में, हर समय, यहाँ तक कि सभी के मामलों में भी सुगंध फैलाता है।

प्रेम के प्राकृतिक गुण को प्राप्त करने का एकमात्र तरीका है श्वास पर ध्यान। प्रेम ध्यान का अवतार बन जाता है। प्रेम की वास्तविक परिणति हमारे भीतर प्रेम का उफान बनती है जो हमें याद दिलाता है कि ध्यान हमारे भीतर स्थित है। तो ध्यान करो और 'प्यार' विशेषता के मास्टर बनो।

हम जो पुण्य करते हैं वह एक ही परिणाम नहीं देते

हर चीज़ 'हमारे द्वारा किए गए सभी अच्छे कर्मों का एक जैसा परिणाम नहीं देती है!' आमतौर पर हम पूजा, प्रार्थना, पाठ, कीर्तन, जल तीर्थ, पवित्र स्नान, नाम, व्रत, स्तोत्र, जप और कई अन्य अनुष्ठान करते हैं।

लेकिन हम नहीं जानते कि इसका क्या परिणाम होगा। हम वही करते हैं जो हमें पसंद है, जो हमें अच्छा लगता है। लेकिन सभी परिणाम समान नहीं होते हैं। यदि हम यह जान लेंगे, तो हम ऐसे कर्म करेंगे जो अधिक परिणाम लाएंगे। कम समय में, कम प्रयास से हम वांछित परिणाम प्राप्त कर सकते हैं। उत्तरी रेखा में:

पूजाकोटि नाम स्तोत्रम, स्तोत्रकोटि नमोजपम ।
जपकोटि समन ध्यानम, ध्यानकोटिसमोलयः।। (उ.गी. 4-52)

आइए उपरोक्त श्लोक के अर्थ का थोड़ा विश्लेषण करें। कोटि पूजा - वे पूजा, प्रार्थना, भजन, कीर्तन, नाम, व्रत आदि हैं जो हम करते हैं, जो एक भजन (यानि ललिता सहस्रनाम, विष्णु सहस्रनाम, आदि) के बराबर हैं। इसके अलावा कोटि स्तोत्र एक जप के बराबर हैं। कोटि जप एक ध्यान के बराबर हैं।

इसके अनुसार एक घंटे तक ध्यान करने से पूरे एक घंटे यानि पूरे जन्म के लिए मानसिक जप का फल मिल सकता है। श्रीकृष्ण का संदेश है कि ध्यान सबसे शक्तिशाली है। इसके आधार पर हम ध्यान की महानता को समझ सकते हैं।

श्रीकृष्ण द्वारा दिए गए संदेश के अनुसार, जप भजन से अधिक शक्तिशाली और ध्यान जप से अधिक शक्तिशाली है। कारण यह है कि पूजा शरीर से की जाती है। स्तुति मुख से की जाती है, जप मन से किया जाता है।

लेकिन ध्यान एक ऐसा अभ्यास है जिसे हम बिना सोचे समझे करते हैं।

इस कारण मन का अभ्यास मुख के अभ्यास से अधिक शक्तिशाली होता है। यह ज्ञात है कि ध्यान साधना सबसे अधिक शक्तिशाली है। ध्यान साधना से कोई भी मुक्ति प्राप्त कर सकता है, अर्थात बीमारी से मुक्ति, अशांति से मुक्ति, भय से मुक्ति, समस्याओं से मुक्ति, दुःख से मुक्ति और अंत में शाश्वत मुक्ति प्राप्त हो सकती है।

एक बात सोचने वाली है कि जब हम पर करोड़ों रुपये का कर्ज है, तो क्या हम छोटी दुकान, कपड़े धोने का व्यवसाय, सब्जी व्यवसाय या फुटपाथ व्यवसाय जैसे व्यवसाय करेंगे तो क्या हमारा कर्ज चुकाया जाएगा? एक छोटा व्यवसाय भी समय के साथ करोड़ों रुपये का कर्ज चुका सकता है। साथ ही अनेक जामों में हमने जो संचित कर्म किए हैं, वे सामान्य पूजा, स्तुति और जपों के कारण संभव नहीं हैं।

शक्तिशाली ध्यान कई उच्च दुनियाओं में ज्ञानोदय और शाश्वत आनंद की ओर ले जा सकता है। जैसा कि कई वर्षों से होता आ रहा है, इस दुनिया में सैकड़ों जन्मों और दुखों को जीने का कोई मतलब नहीं है। हमें अपनी बुद्धि का उपयोग करके थोड़ा ध्यान करना होगा और इस दुनिया में प्राथमिक विद्यालय की तरह जाने की कोशिश करनी होगी - सृष्टि में हाई स्कूल जैसी दुनिया में, कॉलेज जैसी दुनिया में, विश्वविद्यालय जैसी दुनिया में। ध्यान रहे कि यही मानव जन्म का लक्ष्य है।

भगवान की प्रशंसा पानी है

हम नहीं जानते कि भगवान क्या सोचते हैं लेकिन भगवान जानते हैं कि हम क्या सोचते हैं। हम चाहते हैं कि ईश्वर पूजा के घर में, मंदिर में, चर्च में या मस्जिद में हों, इसलिए हम उन्हें वहीं सीमित करते हैं और केवल वहाँ पवित्र होते हैं। लेकिन हम यह नहीं जान सकते कि ईश्वर हम में निहित हैं और हमारे बुरे, स्वार्थी विचारों, हमारे झूठों और हमारे पापपूर्ण कार्यों को देखते हैं। हम सोचते हैं कि वह कुछ नहीं जानते, और अपने आप को एक बुद्धिमान के रूप में सोचते हैं।

ईश्वर न केवल सभी में निहित हैं, वह हमें हर स्थिति में हर चीज के बारे में चेतावनी देते रहते हैं। लेकिन हम यह न जानने पर शोक करते हैं कि यह ईश्वर की ओर से चेतावनी है। उनकी उपेक्षा करना, कई गलतियाँ और पाप करना, और अंत में उनके द्वारा दंडित किया जाना मानते हैं।

यदि वास्तव में ईश्वर के प्रति भय और भक्ति है, तो हमें अंतरात्मा के रूप में उनकी सलाह का पालन करना चाहिए और उनकी स्तुति करनी चाहिए। बस इतना ही पता है कि वह पूजा, प्रार्थना, नमाज, भजन, पौधे, तुच्छ उपहारों से प्रभावित नहीं हो सकते।

हमारा सोचने का तरीका कैसा है! भगवान केवल मंदिर, आराधनालय, चर्च, मस्जिद में हैं, जब हम वहाँ जाते हैं तो वह हमारी प्रतीक्षा करते हैं, उपहारों की उम्मीद करते हैं, हमारे उपहार लेते हैं और हमारे पाप, गलतियों, धोखे और दोषों को शुद्ध करते हैं। बुराई करो, और अधिक उपहार लाओ, और मेरी प्रशंसा करो। मैं यहाँ तुम्हारे लिए, तुम्हारे उपहारों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ! भगवान के बारे में हमारी सोच का स्तर क्या है? हम भगवान की शक्ति को कितना कम आंकते हैं? पता करने की जरूरत है।

फिर भी हमारे सोचने का तरीका यह है कि ईश्वर दयालु हैं। वह हमारी गलतियों और पापों को क्षमा करते हैं। इसलिए जैसा हम अपने जीवन में करते हैं, हम आशा करते हैं कि भगवान का आचरण करने से पूजा, प्रार्थना और

समुदाय के माध्यम से पापों को दूर किया जा सकता है। इतना ही है, परंतु हम नहीं जानते कि परमेश्वर भले के प्रति कितने दयालु हैं। भगवान को जाने बिना, भगवान की शक्ति को समझे बिना, हम पाप करके अपने जीवन में दुख, कठिनाई, समस्याएं और रोग लाते हैं।

इसलिए हमें अपने विचारों को परिष्कृत करने की आवश्यकता है। शब्दों को परिष्कृत करने की जरूरत है, चीजों को परिष्कृत करने की जरूरत है। जब हम मंदिर में होते हैं, जब हम चर्च में होते हैं, जब हम मस्जिद में होते हैं, तो हर जगह उसी तरह व्यवहार करने की अपेक्षा की जाती है। विवेक की चेतावनियों का पालन किया जाना चाहिए।

अगर हमें ईश्वर की कृपा प्राप्त करनी है तो ईश्वर की शक्ति को कम करके नहीं आंका जाना चाहिए। यह स्वीकार किया जाना चाहिए कि सामान्य कार्यों से ईश्वर पर विजय प्राप्त नहीं की जा सकती है। अच्छे काम करें! संसार का कल्याण करें, स्वार्थ का त्याग करें! हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम जो भी काम करते हैं, हर काम पर ध्यान दिया जाता है। हम जो कुछ भी करते हैं उसका परिणाम होता है। विशेष रूप से प्रार्थनापूर्ण नहीं। ध्यान रहे कि पूजा नहीं है। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि यदि हम अंतःकरण की प्रवृत्ति के अनुसार चलते हैं, अर्थात यदि हम वास्तव में परमेश्वर के कहे अनुसार चलते हैं, तो हम विशेष रूप से परमेश्वर की आराधना नहीं करना चाहते हैं। प्रार्थना न करें क्योंकि हम वास्तव में परमेश्वर के अनुसार चल रहे हैं। भगवान की मूर्तियों की पूजा करना एक व्यर्थ कार्य हो जाता है।

एक दुकान के मालिक ने अपनी दुकान अपने क्लर्क को सौंप दी और एक महीने बाद लौट आया। इस महीने में क्लर्क ने वह नहीं किया जो मालिक ने कहा था। वह दुकान का सारा सामान बेच देता था और खुद पैसा कमाता था। मालिक को काफी नुकसान हुआ। लेकिन क्लर्क हर दिन फोटो लगाकर मालिक की पूजा करता था। वह ऐसे व्यवहार करता था जैसे उसकी बहुत भक्ति थी। अब कल्पना कीजिए कि मालिक ने खुद को नुकसान पहुंचाया, क्या वह क्लर्क को उसकी कही गई बातों के विपरीत व्यवहार करने के लिए दंडित

करेगा? नुकसान होने पर भी क्या वह उसकी पूजा करने पर उसे क्षमा करेगा? आप किसी को कितनी बार माफ कर सकते हैं? यदि वह पूजा करने का दावा करता है तो नुकसान किस हद तक सहन कर सकते हैं? निश्चित रूप से निराशाजनक होगा ना?

जब मेरे मन में अपने लिए इतनी भक्ति और सम्मान है, तो मैं जैसा कहता हूँ वैसा क्यों नहीं करते? क्या मेरे कहने के लिए भक्ति पर्याप्त नहीं है? क्या मुझे विश्वास है कि मैं जो कहता हूँ उसे किए बिना वह मेरी पूजा कर रहा है? मैं बस इतना चाहता था कि मुझे बताया जाए! अगर मैं पूजा अपने नुकसान के लिए कर रहा हूँ तो यह सुनिश्चित करने के लिए क्लर्क को फटकारना नहीं है कि यह सबसे अच्छा नाटक है।

और जब साधारण मानव गुरु अपनी पूजा और प्रशंसा को महत्व नहीं देता है, तो वह भगवान के सर्वोच्च व्यक्तित्व, भगवान के निर्माता के शब्दों का पालन किए बिना, उनकी पूजा, भजन और प्रार्थना को महत्व कैसे दे सकता है? सब कुछ उसकी अंतरात्मा के रूप में है ना? वह हमारी गलतियों को कैसे माफ कर सकता है?

अगर उसकी रचना हमारे अपने स्वार्थ के लिए, हमारे अपने सुख के लिए खंडित हुई है, अगर कोई उन साथियों को मारता और यातना देता है जो स्वतंत्र रूप से और खुशी से जीने वाले हैं! भगवान दंड अवश्य देते हैं।

बस इतना ही, लेकिन हमें यह महसूस करना चाहिए कि हम जो पूजा और प्रार्थना करते हैं, उसके अधीन नहीं हैं। ईश्वर की शक्ति को जानने की जरूरत है। याद रखें कि ईश्वर सर्वव्यापी हैं। इसलिए ईश्वर के कहे अनुसार उपासना की अपेक्षा विवेक के रूप में पालन करना अधिक महत्वपूर्ण है। यही सच्चा सम्मान है जो हम भगवान को देते हैं।

शक्ति प्राप्त करने के लिए ध्यान करना चाहिए। अभी हम श्वास पर ध्यान दे रहे हैं। आत्मा का अर्थ है ईश्वर को महत्व न देना। यदि ध्यान अच्छे से किया जाए तो मन का महत्व कम हो जाता है और आत्मा का महत्व बढ़ जाता है।

भक्ति और मुक्ति पानेवालों की तुलना नहीं करनी है

हमें डर है कि हम कहीं खो न जाएं। हमें लगता है कि हम भगवान को छोड़ रहे हैं। इसलिए हमें ध्यान की आवश्यकता नहीं है। हम किसी चीज की भक्ति के मार्ग पर हैं। भक्तप्रह्लाद, ध्रुव, मार्कंडेय, अन्नामय्या इतने सारे लोगों का उदाहरण देकर, वे सभी भक्ति मार्ग में चल रहे थे क्या हम नहीं चल सकते? ऐसा बोलते हैं। हमारे लिए नए रास्ते क्यों? ऐसा कहा जाता है।

तो प्रह्लाद और अन्य की तुलना उनसे की जाती है। वे अपने आप को बराबर महसूस करते हैं। लेकिन उनकी भक्ति, जिसका उनकी भक्ति से कोई लेना-देना नहीं है, उन्हें भी मूल के साथ तुलना करने के लिए पर्याप्त माना जाता है। भक्ति मार्ग में भटकने वाले सभी लोगों ने सांसारिक सुखों को त्याग दिया है, और उसी लक्ष्य और उसी ईश्वर को प्राप्त करने की खोज के साथ जीते हैं। जीवन में कितनी भी मुश्किलों का सामना करना पड़े, कितनी भी बाधाओं का सामना करना पड़े, उन्होंने अपने लक्ष्य को नहीं छोड़ा। उनका प्रयास नहीं रुका।

लेकिन हमें लगता है कि हम ऐसे लोगों की तुलना में भक्ति के रास्ते पर हैं। लेकिन हम उनके साथ तुलना करने के लिए भी पर्याप्त नहीं हैं।

वे भगवान से प्यार करते हैं। लेकिन उस भगवान पर ध्यान नहीं देते। कमाई पर, चीजों पर, समस्याओं पर, टीवी पर, कार पर, आराम पर, पदों पर, भोजन पर, सब कुछ पर ध्यान केंद्रित करते हैं। उन्हें प्राप्त करने का प्रयास करें। लेकिन भगवान पर ध्यान नहीं देते। उन्हें पाने की कोशिश नहीं करते। जब उनका ध्यान ईश्वर पर नहीं है, तो ईश्वर उन पर कैसे केंद्रित हो सकते हैं?

अगर आप ऐसा सोचते हैं, तो इच्छाएं भगवान से ज्यादा आपकी हैं। भगवान से उनकी इच्छा यही है कि भगवान उनकी मनोकामनाएं पूरी करें और

उन्हें संकट से उबारें! और इच्छाएं अधूरी रह जाती हैं तो हम उस भगवान को भी बदल देते हैं जिनसे हम बहुत प्यार करते थे।

क्या प्रह्लाद की भक्ति की तुलना में उनकी भक्ति का कोई संबंध है? प्रह्लाद की कठिनाइयों के बावजूद भगवान को पाने की खोज, लक्ष्य नहीं बदला। वह मरने के लिए तैयार थे, चाहे कितनी भी बार उन्हें मारने की कोशिश की गई हो। लेकिन वे हिले नहीं। भगवान नहीं बदले।

तो उनकी तुलना करने से पहले, असली भगवान कौन हैं? वह कैसे हैं? अगर वह भक्त बनना चाहता है तो उसे क्या करना चाहिए? सच्ची भक्ति क्या है? क्या भक्त पूजा कर मनोकामना मांग रहा है? या यह जानने की जरूरत है कि क्या करना है? उपनिषदों में भक्ति का अर्थ है "आत्म-साक्षात्कार भक्तिर्यभिधियते।" अर्थात 'भक्ति वह है जो आत्मा से जुड़ी हुई हो' जिसका अर्थ है 'आत्मा से जुड़ा होना।' जो आत्मा पर केंद्रित हैं वे ध्यान कर रहे हैं, और इसलिए हमें अपनी तुलना मोक्ष प्राप्त करने वालों की भक्ति से नहीं करनी चाहिए।

भगवान से इष्टता बढ़ाने से पूर्व

भगवान के लिए एक पसंद का चुनाव करने से पहले क्या आपको पसंद है यह अगर पूछा जाए तो हम तुरंत भगवान को किसी और से ज्यादा पसंद करते हैं।

इसे इतना पसंद करने का क्या कारण है? ईश्वर को ऐसी इच्छा क्यों है जो किसी को नहीं है? यह सोचकर कि हम भगवान को पसंद करते हैं इसका मुख्य कारण यह है कि भगवान हमारी इच्छाओं को पूरा करते हैं। वही एकमात्र हैं जो हमारी इच्छाओं, समस्याओं और कष्टों को देख सकते हैं।

पसंदीदा भगवान के बारे में पता लगाने की कोशिश करते हैं। लेकिन हम किसी को, या कुछ भी नहीं देते हैं, लाभ उस व्यक्ति की वजह से नहीं, बल्कि उस वस्तु के कारण जो इसे उठाए जाने से पहले था क्या यह होता है? क्या हमारी जरूरतें पूरी होंगी? आइए देखते हैं।

किसी आइटम को असेंबल करते समय बहुत कुछ पूछते हैं और बहुत कुछ सीखते हैं। वह वस्तु किसने बनाई? इसकी गुणवत्ता क्या है? क्या हमारे लिए इसे खरीदना बेहतर होगा? क्या यह हमारे द्वारा खर्च किए गए पैसे के लायक है? इसके बारे में कई तरह से सोचेंगे। हम इस तरह की हर चीज के बारे में जानने की कोशिश करते हैं। लेकिन हम उस परमेश्वर के बारे में जानने की कोशिश नहीं करते जिनसे हम बहुत प्यार करते हैं।

असली भगवान कौन हैं? वह कहाँ हैं? कैसे हैं? उनके पास कितनी शक्ति है? उनका व्यवहार कैसा है? क्या वह धरती पर कुछ लोगों तक ही सीमित हैं? क्या वह केवल उन्हीं को आशीष देते हैं जो उसकी उपासना करते हैं? या सभी को आशीर्वाद देते हैं? क्या वह केवल मंदिर और गिरजाघरों में होते

हैं? क्या उन्हें हमारी इच्छाओं को सुनने के लिए मध्यस्थों की आवश्यकता है? क्या वह वास्तव में इच्छाओं को पूरा करते हैं? क्या वह केवल पाप और गलतियों को क्षमा करने के लिए हैं? क्या उनके पास और काम है? जब तक उसके मन में सबके प्रति प्रेम, दया और करुणा है, तब तक वह काम कराने वालों के प्रति कैसा व्यवहार करेंगे? क्या वह गैर-अनुशासन और बुराई को दंडित करते हैं? इस तरह आपको उनके बारे में जानने की कोशिश करनी चाहिए।

क्या एकमात्र भगवान हैं सृष्टि में सभी जीवित चीजों के लिए? अगर वह वास्तव में धरती पर आए तो उनका व्यवहार कैसा होगा? क्या हम वास्तव में उन्हें पहचान सकते हैं यदि वह हमारे सामने आएं? हम उनके भक्त कैसे बन सकते हैं जब हमें पता ही नहीं कि वे हमारे सामने आ रहे हैं? क्या वह सर्वव्यापी हैं? क्या यह कुछ जगहों पर हैं? क्या उनके पास वास्तव में रूप है? कोई नाम है? वह हमसे क्या उम्मीद करेंगे? हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए? हम जो करते हैं क्या वह उसका आनंद लेते हैं? खुश रहने के लिए क्या करें? हमारा वास्तविक व्यवहार क्या होना चाहिए? सभी को सोचना चाहिए। इसलिए भगवान पर इच्छा डालने से पहले उनके बारे में जानने की जरूरत है। जागरूकता बढ़ाने की जरूरत है। आपको बस इतना करना है कि ध्यान करना है। ध्यान केवल निराकार ईश्वर की शक्ति को जानने के बारे में नहीं है, यह उसे साकार करने के बारे में है।

भगवान की शक्ति को कम नहीं करना है

आमतौर पर हम ईश्वर के बारे में कहते हैं, 'ईश्वर निर्जीव, सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान हैं।' भले ही ईश्वर सर्वव्यापी है, हम केवल मंदिर, चर्च और मस्जिद में ही पवित्र क्यों रहते हैं? बाहर आने पर वह पवित्रता, वह विनम्रता, पूरी तरह से बदल जाती है। भगवान मंदिर में हैं, ऐसा सोचते हैं, मूर्ति भगवान के समान है। कहीं और ऐसा लगता है कि भगवान मौजूद नहीं हैं।

लेकिन वह मंदिर में ही नहीं, बल्कि हर जगह सर्वव्यापी हैं। मान लीजिए कि आप हर जगह देख सकते हैं। क्या इसका मतलब यह नहीं है कि हम भगवान के बारे में जानते हैं? हम उन लोगों की तरह अनजाने में कार्य क्यों करते हैं जो जानते हैं और जानते भी नहीं हैं? अगर हम अपने पवित्र व्यवहार को मंदिर, चर्च, मस्जिद तक सीमित रखते हैं, तो क्या यह ईश्वर की शक्ति को सीमित करना नहीं है? क्या उनकी शक्ति को कम करना और उस तरह का व्यवहार करना अनुचित नहीं है?

अगर मूर्ति भगवान है तो हम अपने मन में क्यों कहते हैं कि जब वह हमारे सामने होंगे तभी अपनी इच्छाएं बताएंगे? हम यह कहते हैं कि ईश्वर सर्वव्यापी, सर्वशक्तिमान हैं, और मन में जो कहा जा रहा है उसे जानने की शक्ति रखते हैं। जब मन में यह जानने की शक्ति होती है कि वह क्या सोचते हैं, तो क्या वह जान सकते हैं कि वह कहाँ हैं? केवल मंदिर और चर्च में ही नहीं? ऐसे में, क्या यह अनुचित नहीं है कि अपनी शक्ति को चर्च तक सीमित करके ऐसा व्यवहार किया जाए जैसे कि वह सोचते हैं कि वह मंदिर और चर्च में हैं?

हम कह सकते हैं कि ईश्वर के पास दुनिया के किसी भी हिस्से में किसी के भी मन को जानने की शक्ति है और उनकी शक्ति अपार है। लेकिन माइक लगा दो ताकि उसकी बात सुनी जा सके हम पांच भजन और प्रार्थना करते हुए जोर से चिल्लाते हैं। क्या यह ज़ोर से चिल्लाने और कार्य करने की शक्ति को

कम नहीं कर रहा है जैसे कि भगवान जानता है? अपनी शक्ति के अनुसार व्यवहार नहीं करना, जब ईश्वर के पास यह जानने की शक्ति है कि वह अपने मन में क्या सोचता है, तो क्या वह हमारी कठिनाइयों को नहीं जानता है? क्या हमें उसे विशेष रूप से ऐसे मामले में अपनी कठिनाइयों के बारे में बताना चाहिए? क्या इसका मतलब यह नहीं है कि उसे अपनी शक्ति पर संदेह है? क्या ऐसा संदेह करना अनुचित नहीं है?

भगवान से पूछने की जरूरत नहीं है। इस ज्ञान में व्यवहार करना कि 'यदि आप वही करते हैं जो आपको करना है, तो आपको वह मिलेगा जो आपको करने की आवश्यकता है' ईश्वर की शक्ति के अर्थ में ऐसा करने को महत्व देना है।

जब ईश्वर के पास यह जानने की शक्ति है कि मन में क्या है, तो क्या हम अपने अंदर की बुरी भावनाओं और बुरे विचारों को नहीं जानते हैं? और क्यों न हम अपनी भावनाओं और विचारों को पवित्र रखें? क्या हमारे मन की इच्छाओं के साथ-साथ हमारे स्वार्थी विचार, कपटपूर्ण विचार और बुरे विचार भी जाने जाते हैं? और ऐसे विचारों के बिना मन को शुद्ध क्यों नहीं रखते? क्या ऐसा करने के लिए परमेश्वर की शक्ति पर संदेह करना नहीं है? क्या यह उसकी शक्ति को कम नहीं कर रहा है? यह है और अधिक हम मंदिरों और चर्चों में जाते हैं और भगवान से हमारे पापों को दूर करने की प्रार्थना करते हैं। यदि परमेश्वर मन्दिर में है, तो क्या वह उन पापों को नहीं जानता जो हम बाहर करते हैं? जब भगवान बाहर नहीं है। हमारे द्वारा किए गए पापों को कौन रिकॉर्ड करता है? उन पापों को दूर करने के लिए प्रार्थना क्यों करें जो रिकॉर्ड में नहीं हैं? अलिखित पापों के बारे में क्यों? प्रार्थना क्यों करें? क्या हम सभी अच्छे काम अच्छे नहीं करते हैं? पाप नहीं करते? पापों की क्षमा के लिए प्रार्थना क्यों करें? क्या ऐसा नहीं है कि हमने इतनी प्रार्थना करके पाप नहीं किया है? हम पाप कर रहे हैं।

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र ।	Rs.200/-
2) ध्यान विद्या ।	Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार	Rs.160/-
4) एक और जन्म ।	Rs.160/-
5) सत्य मार्ग ।	Rs.150/-
6) भगवान कौन हैं।	Rs.120/-
7) कर्म सिद्धांत।	Rs.120/-
8) ब्रह्म ज्ञान ।	Rs.100/-
9) यह जीवन क्यों है? ।	Rs.100/-

For Books please contact :

Tatavarthi Veera Raghavarao

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

Note from the Publisher

platform for the mind, body & soul.

Are you looking to share your stories and experiences with the world? We publish a wide range of books on self-help and spirituality.

Visit our website to explore our books

www.mbpublish.com

Also, feel free to get back to us at **contact@mbpublish.com**, with any feedback or suggestions! We would love to hear from you.

Call us on **+91 8447749297** for bulk orders, or if you'd like to publish with us.

MB Publishing House

/mbpublishinghouse

@mbpublishinghouse

असली देवालय को पहचानने के लिए सबसे पहले हमें जानना चाहिए कि भगवान कौन हैं? और वह कहाँ होते हैं? धरती पर भगवान को पहचानने और भगवान को पाने का मार्ग सिर्फ एक है, वो यह है कि भगवान हर किसी के अंदर आत्मा के रूप में बसे हुए हैं। इस बात को भगवद्गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने बताया है। इसका मतलब हमारे शरीर में जो आत्मा है वही भगवान है। इसलिए जिस शरीर में आत्मा है वही असली देवालय है। आदि शंकराचार्य जी ने कहा है 'देह ही देवालय है और जीव ही देव है।

आपका

तटवर्ती वीर राघव राव

MB Publishing House

/mbpublishinghouse

@mbpublishinghouse

Rs.120/-